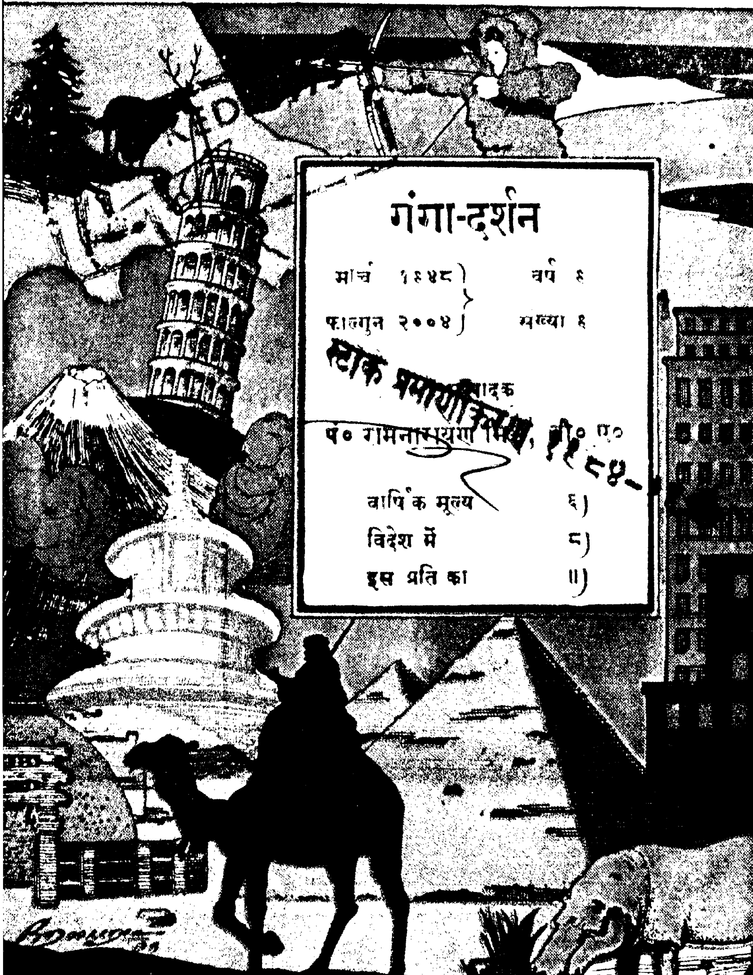
देश दर्शन

पूर्णसंख्या—९८



गंगा-दर्शन

मार्च १९४८ } वर्ष ९
फाल्गुन २००४ } संख्या ९

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य	६)
विदेश में	८)
इस प्रति का	॥)

[illegible] कार्यालय — प्रयाग

गंगा-दर्शन

देवप्रयाग में मुख्य नदी की दो शाखायें भागीरथी और अलकनन्दा हो जाती हैं। देवप्रयाग के ऊपर गढ़वाली लोग हर एक शाखा को गंगा नाम से पुकारते हैं। यदि हम भौगोलिक दृष्टि से विचार करें तो दोनों शाखाओं का दावा गङ्गा का उद्गम कहाने के लिये समान ठहरता है, क्योंकि दोनों की लम्बाई समान ही है और इनके जल के परिमाण में भी कोई विशेष अन्तर नहीं है। इसलिये किसी एक को गंगा का उद्गम कहना अशुद्ध प्रतीत होता है।

फिर भी इस प्रदेश की नदियों में भागीरथी ही मुख्य ठहरती है। यह हरसिल से कुछ मील बीच में से काटती हुई आई है। भैरों घाटी पर जड़ गंगा उत्तर की ओर से आकर इसमें मिल गई है। यह भागीरथी से लगभग दूना जल लाती है। जड़ गंगा और उसकी सहायक मानागड के उद्गम, हिमालय पर्वत की मुख्य श्रेणी (जिसे कभी कभी ज़ास्कर श्रेणी के नाम से पुकारते हैं) के हिमागारों (ग्लेशियरों) में हैं। सतलज नदी का बेसिन इस श्रेणी के उत्तर-पूर्व में है।

देश दर्शन

गङ्गोत्री ग्लेशियर से भागीरथी गौमुख पर प्रकट हुई है। यहां इसका वेग इतना तीव्र है, कि इसको पार करना दुर्गम है।

गौमुख से ऊपर धारा काफी दूर तक ग्लेशियर के नीचे ही नीचे बहती है। गौमुख से दो मील उत्तर एक बड़ी धारा उत्तर की ओर से ग्लेशियर में आई है।

इसका उद्गम दो या तीन मील पर स्थित एक घाटी के एक छोटे ग्लेशियर में है।

गङ्गोत्री ग्लेशियर १५ मील लम्बा है और विस्तृत हिमागार (जिनमें केदारनाथ के उत्तरी ढाल भी शामिल हैं) इसका पेट भरते रहते हैं। चौखम्भा का सुन्दर समूह ग्लेशियर के बिलकुल सिरे पर ही स्थित है। गौमुख से लगभग चार मील ऊपर एक बड़ा ग्लेशियर ऊपर की ओर से आकर गंगोत्री ग्लेशियर में मिला है। चार भिन्न-भिन्न रंग के मोरेन इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। इससे इसका नाम ही चतुरंगी नामक पड़ गया है। चौखम्भा के उत्तर में भागीरथी और अलखनन्दा के के बीच के मुख्य जल विभाजक पर यह ग्लेशियर बर्फ़ के ऊँचे क्षेत्रों से उतरता हुआ मालूम पड़ता है।

इससे यह प्रकट है कि भागीरथी और उसकी

सहायक नदियों के उद्गम हिमालय की मुख्य श्रेणी में हैं, किन्तु बीच में पर्वतों की एक ऊँची श्रेणी होने के कारण तिब्बत के पठार से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

अलखनन्दा और उसकी मुख्य सहायक नदियों के उद्गम हिमालय पर्वत की मुख्य श्रेणी के दक्षिणी ढाल में हैं।

भागीरथी के समान इसका भी निकास दो धाराओं (अलखनन्दा और धौलीगंगा) के मेल से हुआ है। इन दोनों का संगम जोशीमठ पर हुआ है। जोशी मठ से बद्रीनाथ का मन्दिर १८ मील ऊपर की ओर है, और माना ग्राम उससे भी दो मील आगे। माना में अलख नन्दा की धार बहुत छोटी है और यह मुख्य घाटी में पश्चिम की ओर से प्रवेश करती है। इस घाटी की मिट्टी रेतीली है अलखनन्दा का वास्तविक उद्गम उत्तर की ओर की एक घाटी में है यह स्थान सुप्रसिद्ध वसुधारा प्रपात के निकट ही है। मुख्य घाटी दो भागों में विभाजित है। इनमें चौखम्भा के पूर्वी पार्श्वों से बहकर सतोपन्थ और भागीरथ (बगत खरक) नामक दो ग्लेशियर आये हैं।

माना ग्राम से १३ मील उत्तर घासटोली में अरवा नदी आकर इसमें मिली है। अरवा पश्चिम में हिम क्षेत्रों और पूर्व में चतुरंगो ग्लेशियर के जल को बहा लाई है। इस भाग में अलखनन्दा को सरस्वती के नाम से पुकारते हैं। सरस्वती में पूर्व की ओर से कई छोटी छोटी धारायें आकर मिली हैं। इनका उद्गम उस श्रेणी में है, जो कामेट से दक्षिण की ओर जाती है। मुख्य घाटी माना दर्रे पर जो १७८९० फुट की ऊँचाई पर स्थित है, समाप्त हो जाती है।

धौली गंगा—जोशी मठ से दस मील ऊपर पूर्व से आकर ऋषि गंगा इसमें मिलती है। यह नन्दा देवी के बेसिन से निकलती है। इस बेसिन के सम्पूर्ण भाग का पनी इसमें बह आता है। यह संसार के एक महत्त्वपूर्ण तंग रास्ते में होकर बहती है, जिसका पता (१९३४ ई०) में लगा है।

बीस मील ऊपर मलारी ग्राम में गिरथी नामक एक नदी पूर्व से आकर इसमें मिली है। धौली गंगा स्वयं नीति दर्रे से निकल कर आई है, जो १६,६२८ फुट की ऊँचाई पर स्थित है।

वर्ष की अवस्था में हुआ था। जब बौद्ध धर्म ने शैवधर्म को इस देश में लुप्तप्राय: कर दिया तो आपही ने उसका उद्धार किया था। इन महाशय ने वसुदेव की (जो विष्णु का अवतार हैं) पूजा का प्रचार किया, और हिमालय के तीर्थों की यात्रा पर विशेष ज़ोर दिया। जोशीमठ की स्थापना और बद्रीनाथ के मन्दिर का उद्धर आपने ही किया था।

लगभग पचास, साठ हज़ार यात्री बद्रीनाथ और केदारनाथ के दर्शनों के लिये प्रति वर्ष जाते हैं। यात्री लोग ऋषिकेष से लछमण झूला जाते हैं, यहाँ पुल पार कर गंगा के किनारे २ देवप्रयाग, श्रीनगर रुद्रप्रयाग और गुप्त काशी होकर केदारनाथ पहुँचते हैं। फिर वे मन्दाकिनी की घाटी में उखीमठ तक लौट आते हैं। यहाँ से पहाड़ियों को तंगनाथ के रास्ते से पार कर चमोली पर अलखनन्दा की घाटी में पहुँच जाते हैं। चमोली से यात्री बद्रीनाथ जाते है। यहाँ तप्तकुंड में स्नान करते हैं। इसका जल स्नान के लिये एक बड़े जलाशय में एकत्रित किया जाता है। २६ मई को ११ बजे दिन में इसका तापमान १२०० फारेनहाइट था यात्रियों को स्नान की सुविधा के लिये इसमें ठंडा पानी मिला दिया जाता है।

नीति और मान दर्रों के द्वारा गढ़वाल का तिब्बत से व्यापार होता है। यह व्यापार इन्हीं घाटियों के निवासी भाटिया लोगों के हाथ में है। माल याक या भेड़ बकरियों पर ले जाते हैं। याक उत्तरी गढ़वाल ही में पाला जाता है। इसे १०,००० फुट से नीचे नहीं ले जा सकते हैं। गढ़वाल की भेड़ मैदान की भेड़ से भिन्न होती है। यह लगभग १२ सेर और बकरी दस सेर तक बोझा ले जा सकती है।

यद्यपि इस नदी का उद्गम इतना ऊपर है, किन्तु इसका अलकनन्दा नाम धौली गंगा से संगम होने के बाद विष्णु प्रयाग से ही पड़ता है। यहां से नन्दप्रयाग तक धारा का बहाव दक्षिण-पश्चिम है। यहाँ मन्दाकिनी नदी इसमें आकर मिली है। यह त्रिशूल के पश्चिमी ढाल वाले ग्लेशियर से निकली है। फिर कर्ण प्रयाग पर पिण्डरसंगम है। यह नदी नन्दाकोट के सुप्रसिद्ध पिण्डरी ग्लेशियर से निकली है। यहाँ से रुद्र प्रयाग तक धारा का बहाव पश्चिम की ओर रहता है। रुद्रप्रयाग में मन्दाकिनी संगम है। मन्दाकिनी का उद्गम सुप्रसिद्ध तीर्थ केदारनाथ के निकट है।

केदारनाथ में ही स्वामी शंकराचार्य का देहान्त ३२

इस तरह के दो और कुंड केदारनाथ की सड़क पर मन्दाकिनी के दक्षिण तट पर है। ६ अक्तूबर को पांच बजे शाम को जब वायु का तापमान ६४ था। और नदी का ५२० तो एक कुंड के जल का तापमान ७४० और दूसरे का १२८ था। स्नान के लिये इनका भी जल एक जलाशय में एकत्रित किया जाता है।

मन्दिर में दर्शन करने के बाद यात्री जोशीमठ होते हुए उसी रास्ते से कर्णप्रयाग वापिस आ जाते हैं। यहाँ से लोभा रोड होते हुये पंडवाखल चले जाते हैं। इस तरह केवल गढ़वाल ही में उन्हें एक मास लग जाता है।

रुद्रप्रयाग से नदी का बहाव फिर दक्षिण की ओर हो जाता है। श्रीनगर होती हुई देवप्रयाग में भागीरथी से मिल जाती है। इसके आगे व्यासघाट पर नायर संगम होता है। नयार इस जिले के मध्य भाग का पानी बहा लाती है। यह पूर्वी नायर और पश्चिमी नायर नाम की दो धाराओं के योग से बनी है। ये दोनों दूडाटोली पर्वत से निकल कर भटकोली में मिल जाती हैं।

दूडाटोली पर्वत पर जंगली कुत्ते पाये जाते हैं। यहाँ के अतिरिक्त ये पिंडर की घाटी तथा कुछ अन्य

स्थानों में भी मिलते हैं। गढ़वाल के बन्दरों में लंगूर मुख्य है। सांप कम होते हैं।

इन पशुओं के पाये जाने का कारण यहाँ जंगलों का प्राचुर्य ही है। चीड़, बांज ओक, राघ और रांसल अदि वृक्षों के अलावा यहाँ सघन बन विद्यमान हैं। ६००० फुट की ऊँचाई तक के स्थानों में चीड़ के ही बन अधिक पाये जाते हैं। वैसे तो इसकी सीमा १६०० से ७२०० फुट तक है। यह प्रायः अकेला ही पाया जाता है। बांज, ओक यद्यपि ४००० फुट ऊंचे स्थानों पर भी पाया जाता है, किन्तु इसके बन अधिकतर ६००० से ८००० फुट तक ही पाये जाते हैं। इस वृक्ष की लम्बाई कुछ विशेष नहीं होती है।

राघ और गैमल ७५०० फुट से ११००० फुट तक पाये जाते हैं। ये बृक्ष लम्बे होते हैं, किन्तु इनकी शाखायें छोटी और निकट २ होती हैं। कुछ की लम्बाई तो १२० फुट तक पहुँच जाती है, और घेरा लगभग १५ फुट तक। थानेर और साइप्रेस भी इसी ऊँचाई पर पाये जाते हैं। इनकी लकड़ी कड़ी और अधिक समय तक जलने वाली होती है। किन्तु ये पानी पर उतराती नहीं है। बर्च १२००० फुट ऊँचे स्थानों पर भी उग आता है।

वालनट नामक फल वाला वृक्ष जंगल में मिलता है। और उगाया भी जाया है।

व्यासघाट से लक्ष्मणझूले तक गंगा का बहाव पश्चिम की ही ओर रहता है।

गंगा-दर्शन

देहरादून ज़िले में गङ्गा का प्रवेश

लक्ष्मण झूले से हरिद्वार तक गंगा गढ़वाल और देहरादून जिलों की सीमा पर बहती है। इस प्रदेश में नदी का बहाव दक्षिण -पश्चिम की ओर रहता है। यहाँ पर तथा ऊपर के भाग में भी (जिस का वर्णन हम पीछे कर आये हैं) जो ग्राम हैं, वे साधारणतया पहाड़ी के मध्य भाग में स्थित हैं, जिससे आधे भाग में नीचे और ऊपर सरलता से खेती की जा सके। मकान छोटी छोटी सड़कों के दोनों ओर किनारे पर बनाये जाते हैं, एक सड़क पर लगभग छः-सात होते हैं। हर घर के सामने चौक होता है। गौ-स्थान अधिकतर बस्ती से अलग बनाये जाते हैं। रात में पशु इन्हीं में या मकानो में ही गोठ के नीचे बांध दिये जाते हैं। यहाँ गोबर आदि जमा होने दिया जाता है। इससे गंदगी रहती है। अच्छा हो यदि सफ़ाई पर कुछ अधिक ध्यान दिया जाय। पहाड़ी पशु फुर्तीले, कद के छोटे और कदम के पक्के होते हैं। गायें बहुत कम दूध देती हैं। दिन भर में लगभग एक सेर भी नहीं। इनको खाने के लिये पहाड़ों के पार्श्वों पर उगी हुई घास (जिसे औरतें ले आती हैं,) पत्तियाँ या भूसा दिया जाता है। इन्हें नमक बहुत कम मिलता है।

यहाँ के सभी निवासी गेहूँ या चावल खाते हैं। केवल निर्धन व्यक्ति ही मडुआ या झंगोरा अनाज भात और गाहट दाल के साथ खाकर सन्तोष कर लेते हैं। इन लोगों का पहिनावा मैदान वालों के पहिनावे से भिन्न नहीं है। पहाड़ी लोगों

की टोपी छोटी होती है, पैजामा प्रायः सभी श्रेणी के लोग पहिनते हैं।

बाहर जाने वाली वस्तुओं में अनाज जैसे जौ, गेहूँ चावल, दाल, पापड़ झगोरा मड़ुआ, प्याज, आलू, सब प्रकार का कपड़ा गुड़, तम्बाखू, चीनी, मसाले, सूखेफल, और चाँदी के वर्तन विशेष उल्लेखनीय हैं।

नमक सुहागा, टट्टू, जूबू भेड़, बकरी कुत्ते ऊन सब प्रकार का ऊनी सामान, चीनी, जूते, जड़ाऊ तिब्बती जीन चाय, मक्खन, सोना, याक की पूँछ और सींग यहाँ के प्रधान आयात हैं।

लक्ष्मण झूले पर गंगा जी की गहराई तो काफ़ी है, किन्तु पाट कम चौड़ा है। यहाँ श्री लक्ष्मणजी का प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। पहिले इस स्थान पर गंगा को रस्सों द्वारा ही पार किया जाता था। किन्तु फिर एक पुल बना दिया गया था। सन् १९२४ वाली गंगा की बाढ़ में वह टूट गया। उसके स्थान पर लोहे का एक झूलता हुआ बहुत ही सुन्दर पुल सेठ सूरजमल ने बनवा दिया है। इससे यात्रियों को आने जाने में सुविधा हो गई है। पुल को लटकौआ झूला इस लिये कहते हैं। कि इसको साधने के लिये बीच में कोई खम्भा नहीं है।

ऋषीकेश यहाँ से तीन मील दूर है। यह स्थान देखने में एक सुन्दर तपोवन सा मालूम होता है। यहाँ तक अब रेल भी बन गई है। इससे यहाँ की आबादी अब बढ़ चली है। बाबा काली कमली वाले (जिनकी धर्मशालायें उत्तराखंड में स्थान

स्थान पर (हैं का प्रधान कार्यालय यहीं है। यहाँ श्री भरतजी का एक प्राचीन मन्दिर है। रचना और कला से ज्ञात होता है कि यह बुद्ध काल का है। इसकी प्राचीनता में कोई सन्देह नहीं है। यहाँ पर एक चौक बाजार है। जिसमें सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुयें पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो सकती हैं; रात को बड़ी दुकानों पर गैस की रोशनी का प्रबन्ध रहता है। सड़क पक्की है। और सीधी गंगा घाट तक गई है। इस जगह श्रीरामचन्द्रजी का मन्दिर दर्शनीय है। गंगा के किनारे पक्के घाटों का अभाव है। किन्तु अब एक बाँध बनवा देने का उद्योग हो रहा है। आशा की जाती है। की कुछ वर्ष में गंगा-सेंट फार्म बध जाने से हरद्वार की तरह यह स्थान भी खिल उठेगा।

चन्दनवा राव नदी यहीं आकर गंगा में मिली है। इससे इसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। लगभग दस मील नीचे रायवाला के पड़ाव के थोड़ा ही ऊपर संग और सुसवा आकर गंगा में मिली हैं। बीच के प्रदेश में पर्वतों पर चीड़, देवदारु, वान, ओक, खरशू आदि वृक्षों के घने जंगल खड़े हैं।

चीड़ के बन अकेले और वान ओक के साथ में मिले हुये दोनों प्रकार से पाये जाते हैं। इसकी सीमा ३००० फुट से ३५०९ फुट तक है। ५००० फुट से ६५०० फुट तक वान, ओक वुरन और अयार वृक्षों के साथ साथ किन्तु चीड़ के बिना भी पाया जाता है। ६५०० फुट से ९००० फुट ऊँचाई तक देवदार के बन हैं खरासू के वृक्षों के साथ मिला हुआ पाया जाता है। ९०००

फुट से अधिक ऊँचे स्थानों में अधिकतर खरासू और ओक के ही वृक्ष मिलते हैं। चीड़ के वृक्षों से तारपीन का तेल निकालने के लिये कारखाने खुल गये हैं, किन्तु अभी यह व्यवसाय बहुत समुन्नत नहीं है।

फल वाले वृक्षों में सेब, नाशपाती, आम, अमरूद और लीची विशेष हैं।

यहाँ के जंगलों में हाथी, चीते, तेन्दुआ भालू और हाइना पाये जाते हैं। हिरण तो कई प्रकार के मिलते हैं। जंगली भेड़, सुअर, नेवला, खरगोश लोमड़ी और लंगूर खूब हैं। विषैले जन्तुओं में छिपकली, गोड, मेढक, मगर और सांप विशेष उल्लेखनीय हैं।

यहाँ पशु पाले भी बहुत जाते हैं। बहुधा इनकी संख्या आवश्यकता से कहीं अधिक होती है। परिणाम यह होता है, कि इन्हें भर पेट भोजन भी कठिनता से प्राप्त होता है। वर्षा होने के एक या दो माह पहिले से बहुतों को केवल आधे पेट भोजन पर ही निर्वाह करना पड़ता है।

संग और सुसवा पूर्वी देहरादून की नदियाँ हैं। सुसवा का उद्गम आसारोरी-देहरा सड़क के पूर्व में एक चिकनी मिट्टी के जलाशय में है। इसमें आकर रिसपारा राव और किन्दल नदियाँ भी मिल जाती हैं। कन्सराव से थोड़ा ही नीचे सुसवा में आकर संग मिली है। इस नदी का उद्गम टिहरी में है। संग संगम के एक या दो मील नीचे जाखन-राव आकर सुसवा में मिली है। इस संगम के उपरान्त पानी का अधिक भाग संग में होकर जाता है। सुसवा उसके साथ ही साथ बहती

है। किन्तु उसमें पानी बहुत थोड़ा रह जाता है। इस नदी के उत्तर में धाराओं का एक जाल सा बिछा हुआ है।
इस में मुख्य नदी को उसकी सहायक नदियों में से ढूँढ़ निकालने में कठिनाई पड़ती है।

सुसवा संगम के उपरान्त गंगा का जल कई धाराओं में विभाजित हो जाता है। इन धाराओं के बीच में छोटे छोटे द्वीप हैं, जिन पर जंगल उगे हुए हैं। इस प्रकार हरद्वार के नीकट गंगा इस जिले की सीमा को पार कर सहारनपुर जिले में प्रवेश करती है।

गंगा सहारनपुर जिले की पूर्वी सीमा पर बहती है। हरद्वार गंगा के दाहिने तट पर एक उच्च पहाड़ी के नीचे बसा हुआ है गंगा के बायें तट पर चण्डी पर्वत है, जो समुद्रतल से १९३० फुट ऊँचा है। गंगा का प्रवेश शिवालिक श्रेणी के अंतर्गत एक बड़े तंग रास्ते से हुआ है। यह तंगरास्ता सबसे संकीर्ण स्थान पर भी एक मील चौड़ा है।। नदी कई छोटी २ धाराओं में विभाजित हो गई है इनके बीच में द्वीप हैं जिन पर घने बन उगे हुये हैं। मुख्य धार को यहां नील धारा के नाम से पुकारते हैं, यह चण्डी पर्वत के निकट ही बहती है, किन्तु प्रधान शाखा हरद्वार नगर के नीचे बहती है। यह दो मील नीचे कनखल में नील धारा से मिल जाती है।

नदी का किनारा मन्दिरों और घाटों के बने होने के कारण बड़ा सुन्दर प्रतीत होता है। इनमें से सब से पहिले भीमगोड़ा तालाब पड़ता है। कथा है कि गंगाजी जिस समय उतर रही थी, उस समय भीम सेन पाण्डव उन्हें रास्ता दिखाने के लिये वहाँ नियुक्त हुये थे। आपके घोड़े की ठोकर एक चट्टान में लग

जाने के कारण इस तालाब का विकास हुआ था। दूसरी ठोकर इस नगर के अन्दर ही ब्रह्मकुण्ड नामक स्थान में लगी थी। ब्रह्मकुण्ड से मिला हुआ ही हर की पैड़ी का घाट है। यहाँ एक पत्थर पर विष्णु की पादुकायें बनी हुई हैं। यह घाट जो कि हरद्वार में सबसे पवित्र स्थान माना जाता है, पहिले बहुत संकीर्ण था जिससे मेले के अवसर पर बहुत से लोग कुचल कर मर जाते थे। किन्तु यात्रियों की सुविधा के लिये अब इसका काफी विस्तार कर दिया गया है। इसकी पैंदी पक्की कर दी गई है, और गंगा की धार इस प्रकार लाई गई है. कि जल प्रचुर परिमाण में इसमें लगातार आता रहे।

हर की पैड़ी से मिला हुआ ही गंगा द्वार मन्दिर है। यह यहाँ सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण मन्दिर है। इसके बाद सर्वनाथ के मन्दिर तक देव स्थानों की श्रेणी सी चली गई है। सर्वनाथ पर लालतारव आकर गंगा से मिली है।

इसके दक्षिण में मायापुर है। सुप्रसिद्ध पुरातत्व- वेत्ता कनिंघम साहब का अनुमान है, कि मायापुर एक अति प्राचीन स्थान है। अब भी नहर के पुल के सामने एक बड़ा टीला है, जिस पर बड़ी २ ईंटों और पत्थरों के टुकड़े बिछे हुये है। इसके उत्तर में भैरों और मायादेवी के प्राचीन मन्दिर हैं। यहां से दक्षिण पश्चिम में नहर के पश्चिम तट पर नारायणबली का प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। इसमें ईंटें बड़ी २ लगी हैं। इसके उपरान्त एक बड़ा टीला पड़ता है जिसे राजा वेणु के किले का ध्वंसावशेष बतलाते हैं।

गंगा नहर का प्रधान कार्यालय गणेश घाट पर है। हरिद्वार से

थोड़ा ऊपर बहुत से सुधार- घर बनाये गये हैं, जिससे इस धारा में नहर के लिये पर्याप्त जल आ जाय।

यह नहर सन १८५५ई० में लार्ड डलहौजी के शासन-काल में निकाली गई थी। लगभग ६१५ मील बहकर कानपुर में फिर गंगा से मिल गई है। गणेश घर गंगा के बीच में लोहे के बड़े बड़े फाटक लगे हुये हैं। गरमी में ये फाटक बन्द कर दिये जाते हैं, और गंगा का प्रायः सब जल नहर में ले लिया जाता है। वर्षा ऋतु में ये फाटक ऊपर उठा दिये जाते हैं, और नहर पर के फाटक नीचे कर दिये जाते हैं, जिससे नहर में अधिक बाढ़ नही आने पाती है। नहर में जो अधिक पानी आ जाता है वह मायापुर के नहर के पुल फाटक से कनखल की ओर बहा दिया जाता है। यहाँ से गंगा दो भागों में विभक्त हो जाती है। कनखल के पूर्व की ओर गंगा का प्रवाह है और पश्चिम की ओर नहर बहती है।

मायापुर से एक मील दक्षिण कनखल है। यहाँ का बाजार एक पत्थर की पक्की सड़क के दोनों ओर स्थित है। और इसी के दोनों पार्श्व में नगर बसा हुआ है। यहाँ के बहुत से मन्दिरों और गृहों पर चित्रकारी बनी हुई है। जिससे यह नगर बड़ा भव्य प्रतीत होता है।

यहाँ पर दक्ष प्रजापति का मन्दिर है। कहते हैं कि राजा दक्ष ने यहीं पर यज्ञ किया था। जिसे सती के अपमान से क्रुद्ध होकर शिवाजी ने ध्वंस कर दिया था।

कनखल के चार मील नीचे बानगंगा गंगा में से निकली है। वास्तव में बानगंगा गंगा की ही एक उपशाखा है, सम्भव

है कि किसी समय में गंगा जी का बहाव इसी मार्ग से रहा हो। गंगा से निकल कर खादर में इसनदी का बहाव भोगपुर तक दक्षिण की ओर ही रहता है। भोगपुर से रेल की पटरी दक्षिण-पश्चिम होकर मुजफ्फरनगर के जिले में यह फिर दक्षिण की ओर बहने लगती है। इसी जिले में चांदपुर के निकट यह फिर गंगा में मिल जाती है। यों तो बानगंगा का पेंदा स्थिर है, और दोनों तटों की भूमि को बहुत कम नुक़सान पहुँचता है, किन्तु पिछली शताब्दी में इसके मार्ग में बहुत परि-वर्तन हुये हैं, और अब बाढ़ के समय में इस पार से उस पार जाने में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हो जातीं हैं।

कनखल से गंगा का प्रवाह दक्षिण की ओर ही रहता है। इस भाग में गंगा का पेंदा पत्थरों से भरा हुआ है। वास्तव में यह प्रदेश भब्बर इलाके के अन्तर्गत पड़ता है। यह पत्थर बालावली के पुल के बाद जो हरद्वार से १२ मील दक्षिण है नहीं मिलते। नदी का ढाल भी घटता जाता है। बालावली के बाद तो दे नावों से भी गंगा पार की जासकती है।

मध्य भाग में धारा की चौड़ाई परिवर्तित हुआ करती है। इसका प्रभाव तटों की बनवाट पर भी पड़ता है। एक ओर के तट ऊँचे हैं, और दूसरी ओर के ढालू। किन्तु धारा प्रत्येक वर्ष की बाढ़ में कुछ परिवर्तन अवश्य ले आती है।

नदी का जल अक्तूबर के मध्य से घटने लगता है और घटते घटते जनवरी के मध्य में बहुत कम रह जाता है। फिर हिमालय की बर्फ पिघलने के कारण इसका जल फिर बढ़ने लगता है। मार्च के अन्त तक यह लगभग जनवरी से दुगना हो जाता है, किन्तु सबसे अधिक वृद्धि इसमें वर्षा में ही होती है।

गंगा-दर्शन

हरिद्वार से कुछ मील उत्तर रायवालानामक स्थान में गंगा के जल के परिमाण का जो अनुमान लगाया गया है उसके आंकड़े नीचे दिये जाते हैं मार्च मास में—एक सेकंड में ३००० घन फुट वर्षा में :— एक सेकंड में ४८२,००० घनफुट

बाढ़ का प्रभाव जिस भूमि पर बराबर पड़ता रहता है। वह खादर के रूप में परिणत हो जाती है। इस प्रकार सो लानी नदी और गंगा के बीच के समस्त भूखण्ड को हम खादर कह सकते हैं। इसके उत्तर में पहाड़ियाँ हैं। इसके निकट ऊँची जमीन धीरे २ नीचे हुई है. किन्तु ज्यों २ हम नीचे बढ़ते जाते हैं। त्यां २ गंगा क ओर ढाल भी बढ़ता जाता है। यहाँ की जमीन बहुत ऊँची नीची है और उसका रूप भी एक सा नहीं है। बहुधा दो धाराओं के बीच को जमीन रेतीली है, किन्तु जलाशयों और दलदलों में चिकनी मिट्टी अधिक पाई जाती है।

खादिर में अधिकतर जंगल या घास उगी हुई है। इनमें च ड़, खैर, शीशम, ढाक, बेर और सेमल के वृक्ष उगे हुये हैं। साल कही २ पर मिलता है। पर बाँस बहुत पाया जाता है, और इसका वृक्ष भी मूल्यवान समझा जाता है।

मैदान के अन्य जिलों की अपेक्षा यहाँ पशु भी अधिक हैं, किन्तु जंगली पशु धीरे २ बहुत कम हो गये है। शेर और चीते तो लगभग नही के बराबर हैं। तेंदुये बहुत हैं। वैसे हाइना, बन विलाव लाल कुत्ता, भेड़िया, गीदड़, और जंगली सुअर भी खूब मिलते हैं। जंगली हथियों के झुंड के झुंड घूमा करते हैं। जब कभी ये मैदान में उतर आते है, तो धान आदि के खेतों को काफ़ी नुकसान पहुँचता है। हिरन कई प्रकार के पाये

जाते हैं। नीलगाय और बारहसिंघें भी मिलते हैं। सांपों में कोबरा, करैट और डामन मुख्य हैं।

पालतू पशु यहाँ देहरादून जिले वालों की अपेक्षा कहीं अच्छे होते हैं। क्यों कि यहाँ चरागाहें बहुत हैं। इनमें गाय बैल ही विशेष हैं। भेड़ बकरी कम पाई जाती हैं। घोड़ों के लिये किसी समय सहारनपुर बहुत प्रसिद्ध था किन्तु अब वह बात लुप्तप्राय. हो गई है।

खादिर का प्रदेश इस जिले में बहुत पिछड़ा हुआ माना जाता है। आबादी बहुत कम है। और निवासी अधिकतर खानाबदोश हैं। नदियों और धाराओं को पार करने में कठिनाई पड़ती है। पृथ्वी नम है, और उसके अधिकांश भाग पर घास उगी हुई है। बाढ़ और कटाव से नुकसान हुआ करता है।

जिला बिजनौर

बिजनौर में गंगा का प्रवेश हरद्वार से थोड़ा ही ऊपर होता है। नहर निकल जाने के कारण यहाँ गंगा में जल बहुत कम रह जाता है। पत्थर बेशक बहुत हैं। कुछ दूर आगे इनके स्थान पर रेत ही रेत दिखाई पड़ता है।

यहीं पर शामपुर से दो मील नीचे पैलीराव आकर गंगा में मिली है। इसका उद्गम गढ़वाल के पर्वतों में हैं। वर्षा में यह बड़े बेग से बहती है तब इसमें बड़े बड़े पत्थर पेड़ आदि ब; आते हैं। इससे लगगभ चार मील दक्षिण पश्चिम लालभंग के निकट खासन नदा आकर गंगा में मिली है। इसके बेग में पैली की सी प्रबलता नही है। इसी कारण से इसमें जल भी बारहों मास रहता है। और कुछ भागों में उसका उपयोग सिंचाई

के लिये भी होता है। इसी प्रकार की नदी कोटवाली राव भी है इसका संगम आसफगढ़ के निकट हुआ है। पहली नदी सैफपुर खद्दर से निकलती है, ऊँचे किनारे के नीचे २ बहती हुई यह रावली झाल में मिल जाती है और उसी के कुछ आगे गंगा में ऐसा मालूम पड़ता है कि किसी समय में गंगा इसी मार्ग से बहती थी। अब भी बाढ़ के समय में बहुत सा पानी भर जाता है। और उस से हानि भी खूब पहुँचती है।

मालिन नदी का भी उद्गम गढ़वाल की पहाड़ियों में है। इसका प्रवेश इस जिले में नजीबाबाद पर्गने के उत्तर में होता है यहाँ यह तीन धाराओं में विभक्त हो जाती है। पश्चिम वाली को रतनाल और पूर्व वाली को रिवरी के नाम से पुकारते हैं। रतनाल सहारनपुर के निकट और रिवारी भोगपुर के निकट मालिन से मिल जाती है। गंडावर के निकट लकड़हान इसमें आकर मिल गई है और उसके बाद यह स्वयं गंगा से रावली के निकट मिल जाती है। उत्तर के भाग को छोड़ कर इस नदी की घाटी बहुत उपजाऊ है और इसके दोनों तटों पर खेत लह-लहाते हैं।

कहा जाता है कि कण्व का आश्रम इसी के तट पर था। जहां दुष्यन्त और शकुन्तला की पहली भेंट हुई थी। कालिदास ने इसी कथानक के आधार पर शकुन्तला नाटक की रचना की है।

मालिन के बाद इस जिले में छोइया संगम भी कुछ महत्व रखता है। यह नजीबाबाद पर्गने के समीपुर ग्राम से निकली है। गंगा से इसका संगम जहानाबाद से दो मिल नीचे होता

है। यद्यपि इसकी घाटी का अधिकाँश भाग उपजाऊ है, किन्तु वर्ष के अधिक भाग में यह निर्जन रहती है। इसकी खलिया और पदोही नामक केवल दो छोटी सहायक नदियाँ हैं, जो इससे पडला और मेमन के निकट आकर मिल गई हैं।

इह जिले में गंगा के किनारे किनारे एक खादर की पट्टी है, किन्तु इसकी दशा मेरठ और मुजफ्फर नगर की खादिरों से कुछ भी अच्छी नहीं है। अभी सौ वर्ष भी नहीं हुए होंगे, जब जंगली हाथी ओर चीते इनमें स्वच्छन्दता से घूमते थे। यहाँ के दल दल इतने गहरे थे, कि एक बार एक हाथी एक दलदल में डूब गया था। फिर इसको साफ किया गया और कुछ वर्षों तक धान के खेत लहलहाते रहे किन्तु बाढ़ आदि उपद्रवों के कारण यह फिर उजड़ गई और यहाँ घास के जंगल उग आये। इमली के वृक्ष भी काफी हैं। जंगली पशुओं से यह फिर भी पूर्ण है किन्तु चीते और हाथी कम पाये जाते हैं। जंगली सुअर और हिरन खूब हैं। गंगा में घड़ियाल भरे पड़े हैं। साँपों की पहाड़ी भाग के समान यहाँ कमी नहीं है। चरागाहों की अधिकता के कारण यहाँ मवेशी अच्छी संख्या में हैं। बैल नाटे और गठे बदन के होते हैं। पर यह अन्य जिलों के बैलों की अपेक्षा कहीं अधिक मेहनती होते हैं।

इस जिले से जो वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं, उनमें चीनी, बाँस और जंगल की अन्य पैदावार ही मुख्य है। अनाज इस जिले में कम पैदा होता हैं। जो कुछ यहाँ होता भी है, वह मुश्किल से इसी प्रान्त वालों के लिये पूरा पड़ता है, और अक्सर बाहर से भी मँगाया जाता है। बाहर से आने वाली अन्य

वस्तुओं में नमक, मिल के बने हुए वस्त्र, धातु की बनी हुई वस्तुएँ और मसाले हैं।

मुजफ्फरनगर

इस जिले में गंगा की घाटी या खादर एक ऐसे भाग में स्थित है, जो अवश्य ही किसी समय गंगा का पेंदा रहा होगा। इस समय इसके पश्चिम मे बांगर स्थिर है, जिसके कुछ टीले तो सौ फुट तक ऊँचे हैं। ये धीरे धीरे गंगा की ओर ढालू होते जाते हैं। खादर सबसे अधिक चौड़ा उत्तर में है, जहाँ यह गंगा से बारह मील की दूरी तक फैला हुआ है, किन्तु दक्षिण की ओर यह धीरे धीरे संकरा होता जाता है, यहाँ तक कि भुकर हेड़ी के निकट बांगर गंगा तट से केवल एक मील दूर रह जाता है।

गंगा में वह महान परिवर्तन जिसके कारण इस खादर का विकास हुआ, चौदहवीं शताब्दी में हुआ था। जन श्रुति के आधार पर एक और ऐसा ही परिवर्तन शाहजहाँ बादशाह के शासनकाल में हुआ था। इस दूसरे परिवर्तन के समर्थन में यह बात कही जा सकती है कि नूरजहाँ का ग्राम्यनिवास पुरछप्पर पर्गने के उत्तर पूर्व नूरनगर में था। जब गंगा इसके निकट बहती रही होगी तब यह स्थान अवश्य ही रमणीय रहा होगा। किन्तु गंगा से दूर होने पर जैसा दलदल आदि युक्त दुरवस्था में पड़े हुये नगर को सम्राज्ञी अपने निवास के लिये क्यों चुनने लगी।

तैमूर ने भी अपनी पुस्तक में दोआबे के धावे का वर्णन करते हुये लिखा है कि मेरठ छोड़ने के बाद वह मंसूरा होता

हुआ "पीरोजपुर" गया। यह स्थान या तो हस्तिनापुर पर्गने का फारोज़ पुर हो सकता है, या १७ मील उत्तर भुकड़हेरी पर्गने में शुक्रताल के निकट का। वहाँ से वह गंगा के किनारे किनारे ११ कोस चलकर तुगलकपुर पहुँचा, जो (जैसा कि उसके वर्णन से प्रतीत होता है) अवश्य ही गंगा-तट पर रहा होगा। तुगलकपुर एक अच्छा स्थान है। अकबर के शासनकाल में भी यह एक पर्गने का सदर मुकाम था। किन्तु अब यह सोलनी नदी के तट पर स्थित है और गंगा से लगभग बारह कोस पड़ता है। ऐसा मालूम पड़ता है कि वर्तमान गोर्धनपुर पर्गना उस समय गंगा के उस पार रहा होगा।

भुकरहेड़ी के नीचे बाँगर फिर गंगा के दूर हटने लगता है, यहां तक कि ज़िले के दक्षिण में खादर फिर छः मील चौड़ा हो जाता है।

दूर से देखने में खादर एक चौड़ा चौरस मैदान सा प्रतीत होता है, जिसके स्थान पर खेत नज़र आते हैं। साधारणतया इसमें निम्न कोटि की घास और कहीं झाऊ के झाड़ों के समूह ही मिलते हैं। वृक्ष कम हैं और जाड़े में जब घास सूखने लगती है तो यह प्रदेश भूरा प्रतीत होता है। कहीं कहीं पर जल की धारायें हैं। जंगली पशु (विशेष कर सुअर) बहुत हैं और कृषि को नुकसान पहुँचाते हैं। पशु चराने के लिये यह स्थान अवश्य ही बहुमूल्य है, और बहुत से पशुओं का इससे निर्वाह भी होता है।

इस ज़िले में गंगा तट पर शुक्रताल एक प्राचीन स्थान है। कहते हैं कि शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को इसी स्थान पर

कथा सुनाई थी। शुकदेव जी पादुकाओं का मन्दिर एक टीले पर बसा हुआ है, जिस पर एक बरगद का वृक्ष है। इस स्थान पर और भी मन्दिर और धर्मशालायें बनी हुई हैं। यहां नवाब नजीबुद्दौला ने एक किला बनवाया था।

मेरठ

इस जिले में गंगा मुजफ्फरनगर के पूर्व में बहकर आई है। नदी की धार साधारणतथा स्थिर है, यद्यपि कुछ स्थानों (पूड पर्गना में) पर कटाव हो रहा है और वहां खादर बराबर बदलता चला जा रहा है। ऐसा मालूम पड़ता है कि पुराने समय में गंगा ने अवश्य ही बहुत अधिक पटाव किया होगा। एक जनश्रुति के आधार पर उसने हस्तिनापुर के प्राचीन नगर को नष्ट कर डाला था।

गंगा का उपयोग अब आने जाने के लिये कुछ विशेष नहीं होता है। नारोरा पर बांध बांध जाने के कारण व्यापार के लिये यह मार्ग बन्द हो गया है। सौ मन बोझ ढोने वाली नावें अब भी चल सकती हैं, किन्तु उनका भी कुछ विशेष उपयाग नहीं होता है। इस मार्ग के रुक जाने का एक अन्य कारण रेलों का बन जाना भी है। धारा का उपयोग सिचाई के लिये भी नहीं होता है। क्योंकि तट से वह बहुत दूर पड़ती है।

धार की गति भी बदला करती है। जुलाई और अगस्त में नावें ४५ मील प्रतिदिन (२४ घंटा) की रफ़्तार से उतरती हैं। सितम्बर और अक्तूबर में इनकी रफ़्तार केवल १५ से २० मील तक ही रह जाती है, किन्तु जाड़े के महीनों में तो आठ या नौ मील से अधिक नहीं होती है !

गंगा के खादर के पूर्व भाग में बांगर है इसक नीचे-नीचे लगभग तीन चौथाई भाग में बूढ़ गंगा बहती है। बूढ़ गंगा, गंगा से बहुत सी धाराओं द्वारा सम्बन्धित है। यह मुजफ्फर नगर से फीरोज़पुर ग्राम के निकट इस ज़िले में प्रवेश करती है। और गढ़मुक्तेश्वर के निकट गंगा से मिल जाती है। किम्बदन्ती के अनुसार यह गंगा का एक पुराना पेंदा है। इसका समर्थन तैमूर के उस वाक्य से भी होता है जो उसने अपनी पुस्तक में लिखा है कि "मैंने गंगा के तट पर फीरोजपुर में डेरा डाला"। यह नदी किसी भी उपयोग में नहीं आती है। केवल इसके किनारे उगी हुई घास, कुर्सियाँ या चटाई बुनने के काम में आती है। हस्तिनापुर के सामने कुछ झीलों की सहायता से बूढ़ गंगा एक बड़ा द्वीप बनाती हैं।

खादर में घास के जंगल उगे हुये हैं। जो सुअर आदि जंगली पशुओं से पूर्ण हैं। यहाँ की मिट्टी हल्की और निम्न कोटि की है। जिले के उत्तरी भाग में कटी हुई जमीन लगभग ७ मील चौड़ी है किन्तु दक्षिण की ओर वह बराबर संकरी होती चली गई है। पृथ्वी का धरातल भी उत्तर से दक्षिण की ओर नीचा होता जाता है। यहाँ तक कि पुंठ की मिट्टी केवल धात और ईख उगाने योग्य रह जाती है।

यहाँ के खादर में पन्नी घास अधिक पाई जाती है। यह पशुओं के लिये हानिकारक है। फिर भी इस जिले में पशु पालने का व्यवसाय होता है। और यहां के पशु अच्छे समझे जाते हैं। इनमें गाय, बैल घोड़े खच्चर विशेष हैं। गधे केवल कुम्हार ही पालते हैं।

गंगा-दर्शन

इस जिले में गंगा के तट पर गढ़मुक्तेश्वर और पूठ केवल दो ही स्थान मुख्य हैं।

गढ़मुक्तेश्वर एक उच्च कगार पर स्थित है। पश्चिम में सरायं हैं। पूर्व में नाज की मंडी है। फौजी पड़ाव नगर के पूर्व में है। नगर घना बसा हुआ है। यद्यपि ज़मीन रेतीली है किन्तु पीने का पानी तीस से पचास फुट की गहराई पर मिल जाता है। यहाँ लकड़ी और बांस का व्यापार होता है, जो देहरादून और गढ़वाल से बहकर आते हैं।

कहते हैं कि यह स्थान हस्तिनापुर का एक मुहल्ला था। इस का उल्लेख भागवत पुराण और महाभारत दोनों में आया है। इसका नाम मुक्तेश्वर महादेव के नाम पर पड़ा है, जिनका मन्दिर और नृगकूप सड़क के किनारे बने हुये हैं। कार्तिकी पूर्णिमा को यहाँ एक बड़ा भारी मेला लगता है। इसमें लगभग दो लाख यात्री भाग लेते हैं। यात्रियों में जाट और गूजर विशेष होते हैं। ये लोग सपरिवार बैलगाड़ियों में बैठकर आते हैं जो इनकी रंगबिरंगी पोशाक के कारण बड़ी सुहावनी मालूम पड़ती हैं। गंगास्नान करके ये लोग उच्च कगार पर स्थित गंगा मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं।

गढ़मुक्तेश्वर एक ऐतिहासिक स्थान भी है। फारसी की इतिहास पुस्तकों में इसका वर्णन आया है। मीर भवन नामक एक मराठा सैनिक नेयहाँ के एक प्राचीन दुर्ग का जीर्णोद्धार किया था। अब उसका स्थान केवल एक मिट्टी का टीला है।

गढ़मुक्तेश्वर से आठ मील दक्षिण में स्थित है इसका प्राचीन नाम पुष्पवता है।

हस्तिनापुर के राजाओं का उद्यान यहीं था। पूठ में आकर खादर समाप्त हो जाती है क्योंकि यहां बांगर बिल्कुल धारा के निकट तक आ जाती है।

बुलन्दशहर

गंगा इस जिले में सब से प्रथम सियाना पर्गना में प्रवेश करती है। यहाँ इसका पेंदा निम्न श्रेणी के रेत का है, जो लगभग तीस फुट तक चला गया है। इसमें बारह फुट तक चिकनी मिट्टी और कंकड़ है जिसके नीचे फिर १८ फुट तक भूरा रेत भरा है। नदी में रेत पड़ जाया करता है, और गहरी धार अपना स्थान बदलती रहती है। स्थान परिवर्तन के कारण उत्तरी-पूर्वी तट से बड़े बड़े खंड बारबर कटा करते हैं, जिनकी मिट्टी अन्य स्थानों पर जाकर जमा हो जाती है। दक्षिण-पश्चिम का किनारा बहुत कम परिवर्तित होता है। इसे कठोर चिकनी मिट्टी और कंकड़ के तट सुरक्षित किये हुये हैं। यह बाढ़ की सीमा से भी लगभग बीस फुट ऊंचे है। ऐसे ही तटों पर अहार, अनूप शहर, राजघाट और रामघाट बसे हुये हैं। इन तटों के नीचे धार गहरी और स्थिर रहती है इनमें से कुछ कम से कम सौ वर्ष प्राचीन हैं। वर्षा में गंगा पार जाना नावों के लिये भी कठिन हो जाता है। गंगा जल इस समय गंदला होने पर भी इतना मीठा होता है, कि लोग कुएँ का जल छोड़ कर उसे ही पीते हैं। जाड़े में यह फिर निर्मल हो जाता है। इसका तापमान भी इस समय ५० के लगभग होता है। गंगा में साल भर नावें चल सकती हैं, यद्यपि फरवरी और मार्च में यह कहीं कहीं बहुत उथली हो

जाती है। किन्तु नारोरा पर बांध बँध जाने से आना-जाना लगभग बन्द ही हो गया है।

यहाँ खादर केवल एक संकरी पट्टी मात्र है, जो बाँगर और गंगा के बीच में फैली हुई है। गंगा बाढ़ के समय जो चिकनी मिट्टी इसमें ले आती है, वह इसे बहुत उपजाऊ बना देती है। ऐसा मुबारकपुर और रामघाट में हुआ है इससे यहाँ पर अच्छी फ़सलें उगाई जाती हैं। यह दोनों ही स्थान कंकड़ और चिकनी मिट्टी के तटों से सुरक्षित हैं। रामघाट की रक्षा, नारोरा पर बनाये गये नहरे के बांधों द्वारा भी होती है। यहाँ कीपृथ्वी स्वभावतः नम रहती है, जिस से ऊख भी बिना सिचाई किये उग आती है। यदि कहीं आवश्यकता पड़ी भी तो ढेंकुली वाले कुयें खोद लिये जाते हैं इन स्थानों के अतिरिक्त खादर में आमतौर से खरबूजे आदि ही उगते हैं। कहीं बाजरा आदि भी बोया जाता है। अधिकांश उजाड़ है। इस पर घास और झाऊ के घने जंगल हैं जिसमें सुअर आदि जंगली पशु आश्रय पाते हैं। इनके उत्पात से खादर में कृषी करना और भी कठिन हो जाता है। यद्यपि इस जिले में चरागाह कुछ विशेष नहीं हैं किन्तु फिर भी यहाँ के पशुओ की दशा अच्छी है। गाय, बैल, घोड़े और खच्चर पाले जाते हैं।

गंगा तट पर अहार नामक एक प्राचीन स्थान है। यहाँ से कच्ची सड़कें सियाना और अनूपशहर को जाती हैं। गंगा पार मुरादाबाद जिले में जाने के लिये नाव भी मिलती हैं। यहाँ पर प्राचीन मन्दिर कई हैं, जिनमें अम्बिकेश्वर महादेव का स्थान बहुत प्राचीन माना जाता है। शिवरात्री और दशहरा

पर बड़े बड़े मेले लगते हैं। दो मील दक्षिण में मोहम्मदपुर ग्राम में अम्बिका देवी का मन्दिर है। चैत्र और आश्विन में नगराज के अवसर पर यहाँ मेला लगता है। यह स्थान रुक्मिणी का निवास-स्थान बतलाया जाता है। यहीं श्रीकृष्णजी ने उनका हरण किया था। अहार अहि और हर से बना है। महाराज जन्मेजय ने नागर ब्रह्मणों की सहायता से नागयज्ञ यहीं किया था। इन लोगों को पृथ्वी देकर सम्मानित किया गया था। नागर परिवार यहाँ अब भी पाये जाते हैं।

अहार से आठ मील दक्षिण अनूपशहर है। यहाँ से पक्की सड़क बुलन्दशहर और अलीगढ़ दोनों ही स्थानों को जाती है। गंगा पार जाने के लिये नावों का पुल है यहाँ से मुरादाबाद, बदायं और चन्दौसी को सड़कें जाती हैं। मुख्य बाजार बुलन्द शहर वाली सड़क पर स्थिर है वेबस्टरगंज में दुकानें अच्छी-बनी हुई हैं। एक सराय भी हैं। कार्तिकी पूर्णिमा और फाल्गुन में यहाँ मेले लगते हैं।

अनूपशहर बड़गूजर राजा अनूपराय ने जहाँगीर बादशाह के शासनकाल में बसाया था। सन् १८५७ पानीपत की तीसरी लड़ाई के पहिले अहमदशाह अब्दाली ने अपना डेरा यहीं डाला था।

यहाँ से आठ मील दक्षिण कर्णवास है। कहते है कि इसे राजा कर्ण ने बसाया था। कर्ण शिला नामक एक स्थान यहाँ अब भी बना हुआ है। इसके पास कल्याणी देवी का प्राचीन मन्दिर है, जिसमें नगराज पर बड़ा मेला लगता है। कर्णवास

में गंगा दशहरा पर एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें लगभग एक लाख मनुष्य भाग लेते हैं।

यहाँ से तीन मील दक्षिण राजघाट है। यहां कोई तीर्थ नहीं है। अलीगढ़ से चन्दौसी जाने वाली रेल का पुल यहाँ बना हुआ है। एक रेल का स्टेशन भी है। अधिकतर यात्री कार्तिक स्नान और गंगा दशहरा के समय रामघाट न आकर यहीं गंगा स्नान कर लेते हैं।

यहाँ से चार मील दक्षिण नारोरा है। लोअर (निचली) गङ्गा नहर यहीं से निकाली गई है। नहर के लिये एक बांध गङ्गा में बांधा गया है, और उसे स्थिर रखने के लिये और भी बांध किनारे पर बने हुये हैं। यहाँ से एक पक्की सड़क राजघाट स्टेशन तक जाती है। नहर के किनारे ही अफ़सरों के बङ्गले और दफ़्तर बने हुये हैं। पास ही बाबूगंज नामक एक बाज़ार, डाक-खाना और सराय है।

यहाँ से चार मील दक्षिण रामघाट नामक सुप्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ समस्त भारत से यात्री गंगा स्नान के लिये आते हैं। मुख्य मेले कार्तिक और बैसाखी पूर्णिमा और गंगा दशहरा पर लगते हैं। राजघाट से रेल निकल जाने के कारण यहाँ के मेले अब उतने बड़े नहीं होते हैं, जैसे कि पहिले हुआ करते थे। कहा जाता है कि इस नगर को कृष्ण के भाई बलराम ने कोयल में कोलासुर नामक दैत्य का बध करने के बाद बसाया था।

मुरादाबाद

विजनौर से निकल कर गंगा मुरादाबाद जिले में आती है। यहाँ यह ज़िले की पश्चिमी सीमा पर बहती है। किन्तु यहाँ

इसका पेंदा इतना अस्थिर रहता है कि गांव के गांव इस जिले से मेरठ जिले में, या मेरठ से इस जिले में परिवर्तित हुआ करते हैं। कांकाठेर स्टेशन के निकट गंगा पर रेल का पुल बना हुआ है। इसके बचाव के लिये यहाँ पर बांध बांधे गये हैं, जिससे इस स्थान पर धारा स्थिर रहती है। किन्तु यहाँ से बड़े बड़े परिवर्तन हुआ करते हैं, और वार्षिक बाढ़ के उपरान्त धारा का स्थान बहुत बदला हुआ ही पाया जाता है। यह भय किया जाता है, कि यदि गंगा कटाव करती हुई महावा तक पहुँच गई तो नारोरा पर बने हुये गंग-नहर के केन्द्रस्थान बेकार हो जायँगे। गंगा को पूर्व की ओर आने से रोकने के लिये कई बार उद्योग हो चुका है। रक्षा के बांध बँध जाने से भय का स्थान कुछ दक्षिण अवश्य हो गया है, किन्तु मिटा नहीं हैं। अबगंगा पूर्व की ओर सिरसा ग्राम के निकट मुड़ती है और इस सुन्दर ग्राम को नष्ट भी कर डाला है।

खादर में बहती हुई बहुत सी छोटी छोटी धारायें आकर गंगा में मिली हैं। इसमें से कुछ तो गंगा की छोड़ी हुई पुरानी धारायें हैं, किन्तु कुछ में ऊँचे स्थानों का बहुत सा पानी बह बह कर आता है। उत्तर में कृष्णी और बैया नामक दो छोटी छोटी धारायें आती हैं। ये आजमपुर के निकट धाव नामक झील में पड़ जाती हैं। वैया इससे निकल कर टिगरी के निकट गन्दौली पर गंगा से मिल जाती है। आजमपुर से चार मील दक्षिण देउटी के निकट इसी जलाशय में से पश्चिमी रागड़ निकली है। यह सिहाली के निकट बसई सैन्सैली तक झीलों की एक पंक्ति में होकर बहती है। गजरौले के निकट चाकीखेरा ना-

मक छोइया जो बझरावाँ के निकट से निकलती है इसमें आकर मिली है। यहाँ दलदल से निकल कर यह नदी दक्षिण पश्चिम की ओर घूम जाती है। किन्तु कुछ ही दूर आगे यह दक्षिण की ओर फिर मुड़ती है। हसनपुर से निकट नीलाजी नामक एक दूसरी छोइया इसमें आकर मिली है। यहाँ से ज़िला बदायूँ की सीमा तक यह खादर के ही मध्य में बहती है और यहाँ इसे लोग महावा के नाम से पुकारते हैं।

हसनपुर के दक्षिण में भुन्डी के निकट ऊपर वाला दलदल समदा झील के रूप में परिवर्तित हो जाता है, क्योंकि कलेला छोइया का जल आकर इसमें एकत्रित होता है। यहीं से पूर्वी बागड़ या टिक्टा निकली है। यह इस दलदल से शीघ्र ही निकल कर जब्दा या झरीवाली झीलों के पश्चिम में बहने लगती है। बाढ़ के समय में इसका पानी इनमें मिल जाता है। खराग्रानी के निकट सैयदनगली से निकल कर एक छोइया इसमें मिली है। बहुत सी छोटी छोटी धारायें जिनके बहुधा नाम भी नहीं हैं आकर महवा और टिक्टा में मिली हैं। बाढ़ के समय में गंगा का जल, इन दोनों को अन्तर्गत करता हुआ झीलों तक पहुँच जाता है। इससे इस भू-भाग की खरीफ फ़सल को बहुत हानि पहुँचती है। गंगा का खादर इस ज़िले में एक चालीस मील लम्बी संकुचित पट्टी में स्थित है। यह उत्तर में दो मील चौड़ा है। वहाँ से बढ़ते बढ़ते दक्षिण में आठ मील है। नदी के तट पर एक बड़ी उपजाऊ पट्टी है, जिस पर झाऊ के घने जंगल उगे हैं। यह जङ्गल वार्षिक बाढ़ में गंगा द्वारा छोड़े गये रेत पर बड़ी शीघ्रता से उग आते हैं। इसके बाद खुला खादर मिलता

है, जो जल की अनेक धाराओं से भली भांति सुसज्जित है। यह सब प्रदेश बाढ़ के अन्तर्गत पड़ता है। जिससे यहाँ की पृथ्वी की उपज को बहुत हानि पहुँचती है। परिणाम स्वरूप जनसंख्या बहुत कम है। खेत कहीं कहीं ही देखने को मिलते हैं। जङ्गली सुअर और हिरण के झुन्ड फसल की बर्बादी किया करते हैं। बहुत भाग में व्यर्थ घास उगी हुई बबूल या कीकर के भी बन हैं, जो पतेल के समान मूल्यवान हैं। इसके बाद एक ऊँची पट्टी पड़ती है। जिसे महावा नदी ने दो भागों में विभाजित कर दिया है। यहाँ पृथ्वी शुष्क, और कठोर है। इस पर ढाक के घने बन और खजूर के वृक्ष उगे हुये हैं। दक्षिण की धरती कुछ अच्छी है। इसी से यहाँ कुछ गांव आबाद हैं। किन्तु अन्य स्थानों में केवल खानाबदोश ही पाये जाते हैं। इनकी जीविका का साधन कृषि न होकर ढोर चराना ही है। यह लोग यहाँ रेत आदि एकत्रित करके निम्न कोटि का शीशा भी बनाते हैं, जिसकी चूडियाँ बनती हैं। इसके भी पूर्व में बांगर के नीचे नीचे एक जलाशयों की पंक्ति चली गई है यह नदी के रूप में सम्बन्धित हो जाते हैं। किन्तु अधिकतर यह झीलों के ही रूप में रहते हैं। बांगर का पानी बहकर इनमें आता है, और बाढ़ के समय गंगा भी सम्पूर्ण खादर को डुबोती हुई यहाँ तक पहुँच जाती है। इसीसे खरीफ की फसल का भविष्य हमेशा दुविधा में रहता है। और पृथ्वी को भी नुकसान पहुँचने का भय हमेशा बना रहता है। सूखे वर्षों में रबी की फ़सल नई जमीन और दलदल की पट्टी में उग आती है। यदि साल अच्छी हो जाती है। उत्तरी खादर के घास के मैदान मूल्यवान

हैं। यहां जमींदारों को चरवाही से अच्छी आमदनी रहती है। यह लोग लकड़ी ईंधन और घास बेंच कर भी धन कमाते हैं।

बदायूँ

गंगा इस जिले की सीमा पर लगभग तिरानवे मील तक बहती है। इसका वहाव राजपुरा पर्गना में होता है। वहाँ से यह आसदपुर, सहसवान, उझानी, ऊसेहाट होती हुई उस स्थान पर इस जिले को छोड़ती है, जहाँ फर्रुखाबाद शाहजहाँपुर और बदायूँ जिले मिलते हैं। यह अपना पेंदा बराबर परिवर्तित किया करती है, जिससे इस जिले का क्षेत्रफल बराबर बदला करता है। यहाँ इसमें बहुत से द्वीप निकल आते हैं। यहाँ पर तटों की यह विशेषता है कि यदि एक ओर ऊँचा है तो दूसरी ओर ढाल। नारोरा का बांध बंध जाने से और उसी के सिलसिले में जो और कांध बांधे गये हैं, उनके कारण से बाढ़ के समय में आसदपुर पर्गने में कम नुकसाय पहुँचा है। बबराला के निकट और कछला परदो पक्के पुल बांधे हुये हैं। इनमें से एक के निकट से आरम्भ होकर एक बांध छै मील तक गया है। इससे पीछे वाला प्रदेश सुरक्षित हो गया है। और यहाँ हरे भरे खेत लहलहाते हुये दिखाई पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त नदी तट के अन्य स्थानों का भाग्य हमेशा दुविधा में रहताहै और यद्यपि बेला बहुत उपजाऊ है पर यदि गंगा पूर्व की ओर आने लगे तो यह गुण शीघ्र ही नष्ट हो सकता है।

बूढ़ और गंगा के बीच में खादर की तराई है। इसकी पूर्वी

सीमा पर उथले जलाशय हैं। उत्तर में छोइया है। दक्षिण में सहसवान पर्गना में यह महावा में मिल जाती है। इसके स्थान पर भी झीलों की एक पंक्ति रह जाती है। पहिले कछवारों अथवा छोटी छोटी धाराओं द्वारा इनका जल गंगा में पहुँचता था किन्तु अब इन सब में रेती भर गई है। दलदल बहुत हो गये हैं। कृषि और आबादी बहुत कम हो गई है। इसके बाद ही खादिर कामुख्य भाग है। इसके ऊँचे भाग में जहाँ पृथ्वी अच्छी है और कुएँ खोदे जा सकते हैं, खेती होती है और पैदावार भी अच्छी है। फिर भी कहीं कहीं ऊसर दिखलाई पड़ता है और गन्नौर तहसील के अन्तर्गत एक बड़े भाग पर ढाक का बन है। गन्नौर और सहसवान के इस भाग में बहुत सी छोटी छोटी धारायें बहती हैं। इनका मार्ग अति विषम और अस्थिर है। जब ये अपने किनारों को तोड़ कर बह निकलती है या स्थान परिवर्तन करती हैं तो बहुत हानि होती है। इसमें मुख्य महावा है।

महावा का उद्गम जिला मुरादबाद में है। यह इस जिले में राजपुरा पर्गना में प्रवेश करती है। यहाँ गंगा इससे केवल दो मील दूर रह जाती है, और वर्ष में दोनों का जल एक भीहो जाता हैं। किन्तु राजपुर ग्राम के निकट यह पूर्व की ओर मुड़ जाती है। सहसवान में इसमें छोइया आकर मिलती है। यहाँ से दक्षिण बहती हुई उझियानी पर्गना में यह गंगा से मिल जाती है।

महावा संगम के बाद खादर की पृथ्वी में उन्नती अवश्य

देखने को मिलती है। हरे भरे लहलहाते हुये खेत बराबर देखने में आते हैं, यद्यपि इनके बीच बीच में ऊसर और ढाक के बन भी मिलते हैं। यह दृश्य ऊसेहाट और उझियनी दोनों ही पर्गनों में दिखाई पड़ता है। नदी के समीप की नई जमीन को बेला कहते हैं। गंगा की धर के पश्चिम की ओर हटने के कारण इसका विकास बड़ी तीव्र गति से हुआ है। बेला अधिकतर सहसबान और गन्नौर ही में देखने आता है। क्योंकि जिले के दक्षिण भाग में गंगा उत्तर की ओर बढ़ रही है, जिससे यह दक्षिण का समस्त भाग बेला के रूप में परिर्तित होता जा रहा है। इस संकरी पट्टी में मटियार की एक पतली तह रेत के ऊपर फैली हुई है। इसके बीच बीच में उजाड़ स्थान हैं, जिनमें रेत के टीले या झाऊ के घने जंगल नजर आते हैं। पृथ्वी बड़ी उपजाऊ है, और उस पर कीमती फसलें उग सकती हैं। किन्तु दूसरी बाढ़ में यदि इस पर नई मिट्टी पड़ जाय तो यह उपजाऊ नहीं रहती है।

खादर बनैले पशुओं से पूर्ण है। जंगली सुअर, भेड़िये, हिरण, नीलगाय, गीदड़, लोमड़ियाँ और खरहे विशेष हैं।

इस जिले में कछला नामक स्थान पर गंगा का एक बड़ा मेला लगता है। बदायूँ से यह १७ मील पर स्थित है। बरेली-मथुरा जाने वाली सड़क यहाँ होकर निकली है। एक सड़क सहसवान से भी आती है। बदायूँ से कासगंज जाने वाली रेल का स्टेशन और पुल भी यहीं है। यहाँ पुलिस का नाका डाकखाना, सराय कांजीघर और अफ़ीम की कोठी है। यह स्थान खरी के धन्धे के लिये प्रसिद्ध है। यह फर्रुखाबाद आदि स्थानों को यहां से

भेजा जाता है। गंगा दशहरा पर यहाँ एक बड़ा मेला लगता है।

गंगा के इसी तट पर कछला से छः मील पर ककोरा नामक स्थान है। यहाँ पर कार्तिक पूर्णिमा को एक बड़ा मेला होता है। जो समीपवर्ती कादिर चौक आदि अन्य ग्रामों में भी फैल जाता है। इस मेले में लगभग तीन लाख मनुष्य भाग लेते हैं। अधिकतर यात्री मथुरा, फर्रुखाबाद दिल्ली रुहेलखंड और दोआब से आते हैं। इस मेले में वस्त्र धातु और चमड़े का सामानगा,ड़ियों और मवेशियों का खूब व्यापार होता है।

एटा

गंगा लगभग ३२ मील तक इस जिले की उत्तरी सीमा पर बहती है। पुरानी बांगर से इसकी दूरी तीन मील से दस मील पूर्व तक रहती है। किम्बदन्ती के अनुसार स्थान-परिवर्तन आठ यानौ सौवर्ष पहले हुआ होगा। किन्तु ऐसा मालूम पड़ता है। कि यह बात अकबर के समय के बाद हुई है। धारा अब फिर अपने पुराने स्थान पर आ रही है, और इस सम्बन्ध में काफी कटाव हुआ है, जो अब भी जारी है। गंगा पर कछला घाट अदिरगंज में नावों के पुल हैं जो वर्षा में तोड़ दिये जाते हैं। पहिले इस जिले से रुई नील और तेलहन नावों पर लाद कर बाहर भेजा जाता था किन्तु व्यापार के लिये अब यह मार्ग बन्द सा हो गया है। मल्लाह, कहार, धीवर आदि जातियाँ जो पहिले इस व्यवसाय को करती थी, अब खेती करने लगी हैं या मछली पकड़ कर जीविका उपार्जन करती हैं।

गंगा-दर्शन

गंगा के पूर्व पेंदे में अब बूढ़ गंगा नामक एक धारा बहती है। इसका स्थान भी बांगर से दूर ही रहता हैं। बांगर को यहाँ के लोग पहाड़ के नाम से पुकारते हैं। इसकी औसत ऊंचाई २० फुट है। कहीं कहीं ३० या ४० फुट तक हो गई है। किन्तु सब स्थानों पर एक सी नहीं है। कहीं कहीं तो ढालू होते होते बिलकुल तराई में मिल जाती है। पर कहीं कहीं फिर उठ कर दिवाल के समान हो जाती है या किसी दुर्ग की मीनार के समान प्रतीत होने लगती है। बूढ़ गंगा बहुत धीमी चाल से टेढ़ी मेढ़ी होकर बहती है। बहुधा इसके मार्ग में रेत के टीले या नरकुल के समूह बाधा डाले रहते हैं। इस कारण जब कभी वर्षा अधिक हो जाती है, तो इसका जल चारों ओर फैल जाता है, और अधिक समय तक टिक कर हानि पहुँचाता है। नहर विभाग ने इसके सुधार के लिये अच्छा उद्योग किया हैं। इसे खोद कर गहरा और सीधा किया गया है। प्रति वर्ष इसकी सफाई की जाती है। जिससे नरकुल आदि नहीं उगने पाते हैं।

गङ्गा और पहाड़ (बांगर) के बीचके इलाके को तराई के नाम से पुकारते हैं। यह कहीं कहीं दस मील तक चौड़ी है। इसका क्षेत्रफल ३९९ वर्गमील है। इस प्रदेश के अंतर्गत फैजापुर बदरिया, निधपुर सोरों का आधा भाग पटियाली का एक तिहाई, पचलाना साहाबार आज़म नगर पर्गनों के भी कुछ भाग आ जाते हैं। यहाँ की पृथ्वी बहुत उपजाऊ हैं। इस में हरा भाग (बनस्पति सम्बन्धी भाग) बहुत है। इसी कारण यहाँ के किसान कीमती फ़सलें उगाते हैं। गेहूँ तो लगातार बोते हैं। तराई का सब से बहुमूल्य भाग गङ्गातट पर ही स्थित है इसकी

विशेषता यह है कि इसमें ईख के लिये सिंचाई तक की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इससे कुछ ही हारती हुई जमीन बूढ़गङ्गा के तट पर है। तट से दूर जाने पर धीरे धीरे जमीन की अच्छाई भी कम होती जाती है। बूढ़ गङ्गा के दक्षिण में पृथ्वी बहुत निम्नकोटि के रेत या ऊसर की है किन्तु पहाड़ (बांगर) के निकट पृथ्वी फिर अच्छी हो चलती है। यहाँ ऊख और गेहूँ के खेत फिर दिखलाई पड़ने लगते हैं।

ऊपर यह उपजाऊ मिट्टी खोद कर देखी जाये तो नीचे रेत ही रेत मिलता है। इससे जहाँ ऊपर का पर्त गहरा है वहाँ ही पृथ्वी अधिक उपजाऊ है। जमीन चौरस कहीं भी नहीं है। इस से अधिकतर मिट्टी आकर गड्डे आदि नीचे स्थानों ही में जमा हुई है।

जहाँ पर खेती नहीं होती है वह स्थान पशु चराने के काम में आते हैं। यह कार्य अहीर या गड़रिया ही करते हैं इन लोगों को यहाँ चरवैया, चौपैया या ग्वाला के नाम से पुकारते हैं। उजाड़ स्थानों में ढाक के बन हैं। गङ्गा और बूढ़ गङ्गा की पटरियों में नरकुल खूब होता है। बांगर वाले इनके ऊपर की घास, जिसको गांडर के नाम से पुकारते है, और सेंठा को छप्पर आदिने के काम में लाते हैं। दलदलों में खस नामक घास भी पाई जाती है। इसे इत्र निकालने और टट्टियां बनाने के काम में लाते हैं। यह कार्य सम्पूर्णतया कंजर लोगों के हाथ में है।

इस जिले में गङ्गा से चार मील पर बूढ़ गङ्गा के तट पर

सोरों नामक एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। सम्पूर्ण भारत से यात्री मथुरा जाकर यहाँ आते हैं। वे बूढ़ गङ्गा और घटियाघाट पर गङ्गा स्नान भी करते हैं। सब से प्रसिद्ध मेला पूर्णिमा का अगहन में होता है। बूढ़गङ्गा यहाँ पर हरिपदी नामक एक तालाब बनाती है। इस में यद्यपि बहुत समय से मनुष्यों की अस्थियां पड़ती चली आ रही है, किन्तु वे सब तीसरे ही दिन जलरूप हो जाती है। यात्री लोग इसका जल भर भर कर ले जाते हैं। इसमें १८ पक्के घाट बने हुये हैं। बहुत से मन्दिर भी बने हुए हैं और पीपल के वृक्ष भी हैं। यहां लगभग तीस धर्मशालायें हैं, जिन्हें ग्वालियर और भरतपुर के धनाढ्य व्यक्तियों ने ही अधिकतर बनावाया है। इस छोटे से नगर की प्राय. सभी सड़कें और गलियां पक्की हैं।

सोरों का असली नाम ऊकलक्षेत्र था। जब विष्णु भगवान ने बाराह अवतार लेकर हिरण्यकश्यप का बध किया तब से इसका नाम शूकर क्षेत्र पड़ गया है। पुराने नगर के स्थान पर एक टीला है, जिसे लोग किला के नाम से पुकारते हैं। कहते हैं कि अभी ढाई सौ वर्ष भी न हुये होंगे जब गङ्गा जी इसी के पास बहती थीं। अब इस पर केवल शेख जमला का मकबरा और नीचे सीताराम जी का मन्दिर ही बाकी है। पर इसके ऊपर बड़ी बड़ी ईटें बिखरी हुई हैं और दीवालों के चिन्ह सब स्थानों पर मिलते हैं। जनश्रुति के आधार पर इसका निर्माण राजा सोमदत्त ने किया था। किन्तु इसकी नींव राजा वेणु चक्रवर्ती के हाथों पड़ी बतलाई जाता है। यद्यपि कई एक मन्दिर बहुत प्राचीन बतलाये जाते हैं, किन्तु बाराहजी और सीताराम जी

के स्थान ही मुख्य हैं। यह कहा जाता है कि सीताराम जी के मन्दिर को औरँगज़ेब ने नष्ट कर दिया था। इसका जीर्णोद्धार सन् १८६० ई० में एक वणिक सज्जन ने कराया था। इसके एक शिला लेख पर ११२४ सम्बत् पड़ा हुआ है, जिससे इसकी प्राचीनता निर्विवाद है।

गङ्गातट पर और ऐतिहासिक स्थान कादिरगञ्ज नामक है। इसका पुराना नम चिल्ला छीन है यहाँ टैला ठाकुर निवास करते थे। शुजात खां ने यहाँ एक दुर्ग निर्माण कराया, जिसका दरवाजा अब भी देखने को मिलता है। इसी ने इसका नाम बदल कर अपने एक पूर्वज कादिरदाद खां के नाम पर कादिरगंज रख दिया। शुजात खां डोरी के युद्ध में रुहेला सरदार हाफिज रहमत खां से लड़ते हुये मारा गया। उसका मकबरा यहाँ बना हुआ है।

शाहजहाँपुर

गंगा इस जिले की सीमा पर लगभग १६ मील तक बहती है। नदी की गहरी धार शाहजहाँपुर की सीमा के बाहर पड़ती है। किन्तु उसको कइ शाखयें और छुटी हुई धारायें इस जिले के अंतर्गत हैं। गङ्गा का प्रभाव इस जिले पर नहीं के बराबर है। कोई भी बड़ा ग्राम या नगर इसके तट पर नहीं है। इसके तट पर रेत के उजाड़ खंड हैं। इनमें लम्बी घास और झाऊ के जंगल हैं। केवल भरतपुर में गङ्गा पार जाने के लिये नाव का प्रबन्ध है। यहाँ एक मन्दिर एक डाकखाना और एक स्कूल है। यहाँ ढाई घाट के नाम से एक बड़ा प्रसिद्ध मेला

लगता है, जिसमें लगभग पचास सहस्त्र मनुष्य आते हैं। यह कातिकी पूर्णिमा के अवसर पर होता है। इस जिले में इससे बड़ा दूसरा मेला नहीं लगता है।

फर्रुखाबाद

गंगा सबसे प्रथम इस जिले की उत्तरी सीमा पर बहती है। यहाँ यह इस जिले को बदायूँ और शाहजहाँपुर के जिलों से पृथक करती है, किन्तु उस स्थान से जहाँ कम्पिल, शम्साबाद पश्चिमी और अमृतपुर के पर्गने मिलते हैं, गंगा दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। और अलीगढ़ तहसील को जिले के मुख्य भाग से पृथक करती है। सिंगीरामपुर के निकट यह फिर सीमा पर आ जाती है। वहाँ से यह फर्रुखाबाद और हरदोई के जिलों को पृथक करती हुई बहती है। इस जिले की अन्य सब नदियाँ इसकी सहायक है। वर्तमान तट पर कुसुमखोर और दाईपुर दो ही मुख्य स्थान हैं। फतेहगढ़ से गहरीधार दो मील दूर है, यद्यपि वर्षा में जल निकट आ जाता है। फर्रुखाबाद भी घटियाघाट से दो मील है, यहाँ से पार जाने के लिये नाव मिलती है किन्तु पुराने उच्चतट पर जो गंगा का पहिला किनारा था, कन्नौज, कम्पिल, चिलसारा, शम्साबाद, और कायमगंज आदि नगर स्थित हैं। यद्यपि गंगा अपना स्थान बराबर परिवर्तित किया करती है, किन्तु इसमें यह विशेषता पाई जाती है कि वह जिस ओर को चल पड़ती है, उसी ओर वर्षों तक धीरे धीरे बढ़ती चली जाती है। कई सौ वर्षों तक कन्नौज का परित्याग किये रहने के बाद अब मालूम पड़ता है कि गंगा फिर उसके उच्चतट के नीचे बहेगी।

पार जाने के लिये नाव का प्रबन्ध बहुत से स्थानों पर है। घटियाघाट पर तो एक नावों का पुल भी प्रति वर्ष बनता है।

गंगा जब एक स्थान का परित्याग कर देती है, तो वहां छोटी मोटी धारा बहती रहती है। उसे ही बूढ़ गंगा के नाम से लोग पुकारते हैं। ऐसी ही एक धारा कम्पिल तक आकर दो भागों में विभाजित हो जाती है। इनमें से एक तो उत्तर की ओर बहती हुई गंगा में मिल जाती है, किन्तु दूसरी धारा शम्साबाद से छः मील पश्चिम अजीजाबाद के निकट गंगा से मिली है। दूसरी धारा बहुत उथली है, यहाँ तक कि कहीं कहीं तो यह बिलकुल मालूम ही नही पड़ती है।

गंगा तट की नीची जमीन को इस ज़िले में तराई के नाम से पुकारते हैं। गंगा की धार और उस ऊँचे तट (जहाँ कि) किसी ज़माने में गंगा बहती थी,) के बीच की समस्त पृथ्वी इसमें आ जाती है। फर्रुखाबाद से इब्राहीमपुर तक गंगा अब इस तट के निकट ही बहती है। इसमें तराई का इलाका दो भागों में विभाजित हो जाता है। एक भाग जो फर्रुखाबाद से ऊपर पड़ता हैं और दूसरा जो इब्राहीमपुर से नीचे पड़ता है। उत्तरी भाग जिसका अधिकांश भाग कायमगञ्ज तहसील के अंतर्गत है एक त्रिकोण के आकार में बना हुआ है। इसकी चौड़ाई सात मील से अधिक कहीं भी नहीं है और इसका क्षेत्रफल १६६ वर्गमील है। यह फर्रुखाबाद के निकट आकर समाप्त हो जाती है, यहाँ से गंगा उच्च तट के समीप ही बहने लगती है। कन्नौज से छः मील उत्तर इब्राहीमपुर के निकट गंगा फिर उच्च तट से दूर जाने लगती है। धार और इसके बीच में आठ वर्ग-

मील का एक तराई का टुकड़ा आ जाता है। काली नदी इसके उत्तर में बहती है और फिरोज़पुर कटरी के निकट गंगा से मिल जाती है।

तराई का एक और भाग गंगा पार अलीगढ़ तहसील में है। इसका क्षेत्रफल १८८ वर्गमील है। इसमें अमृतपुर, खरबा-तमऊ और परमनगर के पर्गने आ जाते हैं। इसका कोई भाग ऐसा नहीं जहाँ बाढ़ के समय गंगा का जल न पहुँच सके। जब वर्षा अधिक होती है तो इसका अधिकांश भाग पानी से दो तीन दिन तक डूबा रहता है तब यहाँ बहुत सा रेत जमा हो जाता है।

तराई में यद्यपि ढाक के जंगल अब बहुत नहीं हैं, किन्तु लोगों ने यहाँ बाग़ खूब लगा रक्खे हैं। इससे यह भाग बड़ा सुहावना और सायादार प्रतीत होता है। यहाँ के उच्च तट पर तम्बाखू खूब बोई जाती है। इसके लिये यह ज़मीन बड़ी ही उपयुक्त समझी जाती है। तराई में तरबूज़ भी खूब बोये जाते हैं। इनके लिये फतेहगढ़ प्रसिद्ध है।

इस जिले में सबसे पहला प्रसिद्ध स्थान कम्पिल है। इसे कम्पिल ऋषि ने बसाया था। जनश्रुति के अनुसार यह राजा ब्रह्मदत्त की राजधानी थी। महाभारत में इसका वर्णन आया है। यहाँ दक्षिण पांचाल की राजधानी थी। राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी का स्वयंवर यहीं हुआ था। यहाँ वाले लक्ष्यभेद का स्थान द्रुपद का किला और द्रौपदीकुंड अब भी दिखलाते हैं।

यहाँ एक थाना, एक डाकघर एक स्कूल और एक कांजीघर है। यहाँ से कायमगंज, पटियाली, अलीगंज और सूरजपुर के

घाट को सड़कें जाती हैं। ग्राम के उत्तर में बूढ़ गंगा के तट पर विश्रांतियों की एक श्रेणी अब भी मौजूद है। यहाँ रामेश्वरनाथ और कालेश्वर नाथ महादेव के प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

शमसाबाद कम्पिल से छः मील पड़ता है। यह एक ऊँचे टीले पर बसा है, जिसके नीचे पहले गंगा बहती थी और अब भी थोड़ी दूर पर बूढ़ गंगा बहती है। यहाँ की खास सड़क ईंटों से पटी हुई है। इसके दोनों ओर दुकाने और मकान हैं। एक ओर नाज की मन्डी भी है। इसमें इमली और नीम के वृक्षों के कारण खूब छाया रहती है। इस नगर में कच्चे पक्के सब तरह के मकान बने हुये हैं। कुछ नवाब और पठानों ने तो बहुत अच्छे मकान बनवाये हैं।

खोर का पुराना नगर, जिसके स्थान पर शम्साबाद बसाया गया है, यहाँ से आध मील पर स्थित है। खोर को तेरहवीं शताब्दी में राठौर राजा जयसिंह देव ने बसाया था। तब से अकबर के शासनकाल तक गंगा इसके नीचे ही बहती रही है। सन् १८८८ ई० में शम्सउद्दीन बादशाह ने जल के मार्ग से आकर इस पर चढ़ाई की और इसे जीत कर शम्साबाद बसाया। खोर का अवशेष अब एक टीला ही रह गया है, जो कोट के नाम से पुकारा जाता है। यह लगभग तीस फुट ऊँचा है। इस पर अजीज उल्ला और सय्यद सालिम नामक मुसलमान सन्तों के मकबरे हैं।

फर्रुखाबाद नवाब मुहम्मद खाँ ने फर्रुखसियर बादशाह के नाम पर बसाया था। इसके चारों ओर एक दीवार बनाई गई थी। इसके अन्दर जाने के लिये दस दरवाजें हैं। उत्तर में गंगा,

पैन, कुतुब, दक्षिण-पश्चिम में मऊ, जसमई, खंडिया और पूर्व में मदार, लाल, कादिरी और अमेठी दर्वाजे हैं। दिवालों के घेरे के अन्दर केवल मकान ही मकान नहीं हैं। १८५९ एकड़ के क्षेत्रफल में केवल ९७५ एकड़ पर ही मकान बने हैं। बाक़ी भाग में खेत, बाग़ या खुले मैदान हैं। यहाँ का पानी बहु अच्छा है। और लगभग प्रत्येक घर में एक कुआँ है। यहाँ पक्के घाट जिन्हें यहां वाले विश्रान्ति के नाम से पुकारते हैं दर्शनीय हैं। विशेष शाह बिहारीलाल की विश्रान्ति तो बहुत अच्छी बनी हुई है। साध लोगों के छापे हुये पर्दे और लिहाफ यहां से समस्त भारत में और बाहर भी भेजे जाते हैं। पीतल और लोहे के बर्तनों का काम भी अच्छा होता है।

फर्रुखाबाद से तीन मील पूर्व में फ़तेहगढ़ है। यह फर्रुखाबाद का ही एक भाग है। यहां सरकारी दफ्तर और छावनी है। इनमें काम करने वालों के मकान भी बने हुये हैं। एक बाजार भी है, किन्तु यहाँ का व्यापार कुछ भी उन्नतिशील नहीं है।

फतेहगढ़ से ग्यारह मील दक्षिण सिंधी रामपुर है। यह एक सुप्रसिद्ध तीर्थ है, यहाँ कार्तिकी पूर्णिमा और गंगा दशहरा का मेला लगता है। पहिले इस में दूर दूर से आकर लोग बड़ी संख्या में भाग लेते थे, किन्तु अब उतनी भीड़ नहीं लगती है। यहाँ पर ग्वालियर के राव साहब की दो विश्रांतियाँ और एक खद्दीपुर महाराज की विश्रान्ति अब भी बनी हुई है। एक शृंगी ऋषि का मन्दिर है जिसमें बहुत से लोग दर्शन करने जाते हैं।

कन्नौज इस जिले के बिल्कुल दक्षिण में है। यह नगर

किसने और कब बसाया इसका कुछ भी पता नहीं चलता है। पुराणों में इसकी कथा इस प्रकार है। राजा कुशि यहाँ राज्य करता था। उसके सौ कन्यायें थीं उन्होंने महर्षि वायु से विवाह करने से इन्कार कर दिया, जिस पर ऋषि ने श्राप दिया कि तुम सब कुबड़ी हो जाओ। इससे इसका नाम कन्याकुब्ज या कुब्ज महिलाओं का देश पड़ गया।

एक और कथा के अनुसार इसे चन्द्रवंशी राजा गाधि ने बसाया था और इसका नाम गाधिपुर रक्खा यह एक सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। इसका वर्णन विदेशी यात्रियों ने भी किया है। पाँचवीं शताब्दी में चीनी यात्री फाहियान ने लिखा है कि यह नगर गंगा तट पर स्थित था और इसमें दो विहार बने हुये थे। सातवीं शताब्दी में ह्वान सांग ने इसका बड़ा विशद वर्णन किया है। हर्ष वर्धन यहाँ राज्य करता था और उसके अधिकार में समस्त उत्तर के देश थे। तीन सौ वर्ष बाद महमूद ने अपने हमले के पहिले इसका वर्णन करते हुये लिखा है कि उसने एक अनुपम नगर देखा जो आकाश में अपना सिर ऊँचा किये हुये खड़ा है। शक्ति और बनावट में इसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता है। गजनी के गवर्नर को एक पत्र में उसने लिखा कि "इसमें एक सहस्र संगमरमर के बड़े दृढ़ महल हैं। मन्दिर भी असंख्य हैं। अवश्य ही इसके बनाने में अरबों दीनार खर्च हुये होंगे। ऐसा ही एक और नगर बनाने में लगभग दो सौ वर्ष लगेंगे"। किन्तु महमूद के हमले के बाद कन्नौज फिर न सम्हल सका और दिन पर दिन उसकी अवनति होती ही गई।

वर्तमान समय में कन्नौज एक छोटा सा नगर है। चारों ओर कोसों तक टीले ही टीले नजर आते हैं। आजकल यह इत्र के व्यवसाय के लिये प्रसिद्ध है। जो यहाँ से समस्त भारत और बाहर विदेशों को भी भेजा जाता है।

हरदोई

गङ्गा इस जिले की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर बहती है। इसका प्रवेश कटियारी पर्गना के गदनपुर ग्राम में होता है। हैदराबाद के निकट रामगङ्गा इससे आकर मिली है। इस जिले में गगां पर कोई पुल नहीं है किन्तु नाव का प्रबन्ध कई स्थानों पर है। इस का पेंदा बहुत चौड़ा है और धारा अपना स्थान बराबर परिवर्तन किया करती है। गहरी धार का नियम होने के कारण गांव इस जिले से फर्रुखाबाद में या फर्रुखाबाद से इस जिले में परिवर्तित हुआ करते हैं। धारा आजकल फर्रुखावाद की तरफ जा रही है. जिससे हरदोई का क्षेत्रफल बढ़ेगा। बाढ़ के समय जल सम्पूर्ण तराई में फैल जाता है। इस से रेत जमा होने लगता है और पृथ्वी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो चलती है। बाढ़ के वाद गङ्गा कई सोते छोड़ जाती है जो दूसरी बाढ़ में अधिक हानि पहुँचाने में बड़े सहायक होते हैं। सांड़ी के पश्चिम का समस्त भाग समुद्र के समान मालूम पड़ने लगता है। सोतों में मुख्य गरगुइया है। यह बिलग्राम में उच्च तट के नीचे नीचे ही बहता है। कन्छनदाव पर्गने की कल्यानी नदी तो उन्नाव जिले तक बहती हुई चली जाती हैं। भरका, करना, गहा और सोता नामक अन्य धारयें हैं। यह सब तराई के अंतर्गत

हैं। जाड़े में सूख जाने के कारण इनका प्रयोग सिंचाई के लिये नहीं हो सकता है।

कानपुर

गंगा इस जिले की उत्तरी-पूर्वी और पूर्वी सीमा पर बहती है। इसके तट पर बिल्हौर, शिवराजपुर, कानपुर और नरवल की तहसील और पर्गने हैं। इसका पेंदा चौड़ा और रेतीला है। इसमें गहरी धार अपना स्थान बराबर परिवर्तित किया करती है। प्रति वर्ष रेत के तट बनते हैं और कट जाते हैं। इससे वर्षा में गंगा बहुत चौड़ी हो जाती है, किन्तु जाड़े में फिर सिकुड़ कर छोटी हो जाती है। इस के घटने का एक कारण इसके जल का नहरों में बँट जाना भी है। इसी कारण से इसका उपयोग अब व्यापार के लिये अधिक नहीं होता है। यद्यपि छोटी छोटी नावें अब भी चलती हैं। इसके तट पर मटियार की एक पतली पट्टी है, किन्तु आम तौर से रेत ही रेत दिखाई पड़ता है। इसी कारण से कृषि के दृष्टिकोण से इन कटरियों का मूल्य कुछ विशेष नहीं है किन्तु कानपुर तहसील में बिठूर से कानपुर तक का भाग उपजाऊ है। मालूम पड़ता है कि किसी समय गंगा इसमें होकर बहती थी, किन्तु अब यह भाग बाढ़ के समय भी सुरक्षित रहत है। इसे कछार के नाम से पुकारते हैं। यहाँ बिना सिंचाई किये हुये ही अच्छी फसलें उग आती हैं।

कटरी के बाद बांगर आ जाता है। किन्तु यह बहुत स्थानों पर कटा हुआ है। इन कटानों से छोटे छोटे नदी नाले प्रान्त का

पानी गंगा में बहा लाते हैं। बांगर सब स्थानों पर एक समान ऊँचा नहीं है। शिवराजपुर पर्गने में दुर्गापुर में और जाजमऊ में टीले के रूप में परिवर्तित हो जाती है। किन्तु अन्य स्थानों में यह कही कुछ ऊँचा और कहीं कुछ नीचा है। इसके बीच बीच में खेत आ जाते हैं। लगातार कटाव होते रहने के कारण पृथ्वी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो गई हैं। कुछ समय के लिये भी कृषि बन्द कर देने से वह बड़ी क़ठोर हो जाती है। जल के अधिक गहराई पर होने के कारण सिंचाई भी नहीं हो पाती है।

इस जिले में गंगा की सहायक ईसन और नोन दो ही नदियाँ हैं। ईसन का उद्गम अलीगढ़ जिले के दक्षिण-पूर्व में ही है। वहाँ से यह एटा, मैनपुरी फर्रुखाबाद के ज़िले में बहती हुई इस ज़िले में उत्तर की ओर से मकनपुर के निकट प्रवेश करती है। यहाँ यह बिल्हौर तहसील में दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई महगाँव के निकट बाँगर को काटती हुई गंगा में मिल जाती है। ईसन एक चौड़ी रेतीली घाटी में होकर बहती है। यह प्रतिवर्ष खूब कटाव करती है। जिससे इसके तट पर रेत के टीले बन गये हैं। उत्तरी तट पर तो इनका धरातल ठीक है किन्तु दक्षिणी तट पर बहुत ढलवां हैं। इससे पृथ्वी बहुत ऊँची नीची हो गई है। और कहीं कहीं पर अन्दर की ओर कई मील तक ऐसी ही चली जाती है।

गंगा की दूसरी सहायक नोन है। इसका यह नाम कदाचित इसके जल के खारी होने के कारण पड़ा है। इस कारण बिल्हौर तहसील के उत्तरी भाग में जहाँ से यह निकली है।

रेह की अधिकता है। इस भाग में जिसका प्राचीन नाम झावर गाँव है, दलदल बहुत है। यहीं से जल आवश्यकता से अधिक होने पर बह कर नोन नदी के रूप में आ जाता है। वास्तव में यह नदी के रूप में शिवराजपुर में आ पाती है। ग्राडट्रंक रोड पार करने के बाद इसकी घाटी गहरी हो जाती है। इसके किनारे कटी हुई भूमि बहुत है। इनका विस्तार बिठूर के नीचे गङ्गा संगम होने तक बढ़ता ही गया है।

गङ्गा की तीसरी सहायक पांडु नदी है। किन्तु इसका संगम गङ्गा से इस जिले के बाहर फतेहपुर में तीन मील चलकर हुआ है। पांडु का उद्गम फर्रुखाबाद में हुआ है। इस जिले में यह बिल्हौर तहसील के नैला ग्राम में प्रवेश करती है। वहां से बिल्हौर, शिवराजपुर कानपुर नरवल तहसीलों में टेढ़ी मेढ़ी बहती हुई फतेहपुर जिले में चली जाती है। वहां से फिर उत्तर-पूर्व को लौट पड़ती है और कई मील तक इस जिले की सीमा पर बहकर फिर पूर्व की ओर घूम कर गङ्गा से मील जाती है। इस भाग में कई नदियाँ आकर मिली हैं। बिल्हौर में, नई शिवराजपुर में लोखा, कानपुर में भोनी और नरवल में फगइया और भोनरी हैं इसका पेंदा अधिक गहरा हो जाता है और इसका प्रभाव निकटवर्ती जमीन पर भी पड़ता है। शुरू शुरू में इसक स्थान स्थिर है किन्तु कानपुर के उत्तर में जमीन बहुत रेतीली हो जाती है। यहाँ की मिट्टी का रंग कुछ लाल है। नरवल में यह बात कुछ अधिक हो जाती है। अन्तिम कुछ मीलों धरातल तक की पड़ोस की पृथ्वी से इसका धरातल कुछ अधिक नीचा होगया है। यहाँ इसके तटों की पृथ्वी उपज और कृषि के लिये सर्वथा अनुपयुक्त है।

इस जिले में सबसे पहिला स्थान गङ्गा तट पर नानामऊ है। विल्हौर से यह चार मील है। एक कच्ची सड़क द्वारा यह उससे सम्बन्धित भी है। गङ्गा पार जाने के लिये नाव मिलती है। पार बांगर मऊ को एक सड़क जाती है। अकबर के शासनकाल में यह एक पर्गने की राजधानी था। यहां का श्मशान घाट प्रसिद्ध है। जैसा कि निम्नलिखित किंवदन्ती से मालूम होता है—

"देशभर का मुर्दा नानामऊ का घाट"

इसके बाद सरैयाँ घाट मिलता है। यह पक्का बना होने के कारण प्रसिद्ध है। आम तौर से गङ्गा तट के घाट कच्चे ही हैं। इसके निकट खेरेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ मेला लगता है।

यहाँ से पाँच मील पर बन्दी मात घाट है। यहाँ बन्दी माता का प्राचीन मन्दिर है।

फिर बिठूर मिलता है। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं। कहा जाता है ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण करके यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था। वह स्थान अब भी ब्रह्मावर्त घाट ये नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर रामायण के बाल्मीक ऋषि निवास करते थे। सीताजी ने ऋषि के आश्रम में यही पदार्पण किया था और लवकुश का जन्म यहीं हुआ था। कहा जाता है कि रमेल (रणमेल) ग्राम में राम और लवकुश। का फिर से मेल हुआ था। यहाँ कपासेश्वर जो काकपक्ष ेश्वर (श्रीरामजी का एक नाम का अपभ्रंश मालूम पड़ता है,) का मन्दिर है।

वर्तमान काल में सिंहासनच्युत करके बाजीराव पेशवा यहीं

रक्खे गये थे। यहाँ कई पक्के घाट हैं, किन्तु सब भग्नावस्था में हैं, केवल राजा टिकैत राय के घाट का जीर्णोद्धिर हुआ है।

बिठूर के बाद कानपुर का सुप्रसिद्ध व्यापाररिक नगर पड़ता है। इसने इतनी शीघ्रता से उन्नति की है, कि अब इसे उत्तर-भारत की औद्योगिक राजधानी कहते हैं। यह ई० आई० आर० की प्रधान शाखा पर स्थिर है। जी० आई० पी० आर० और बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० का भी स्टेशन है। सुप्रसिद्ध ग्रांड ट्रङ्क रोड यहाँ से गुजरती है। उरई और लखनऊ को भी पक्की सड़कें यहाँ से जाती हैं। इन्हीं सब सुविधाओं के कारण यह इतना उन्नति शील हो गया है। यहाँ से रुई' खाद्य पदार्थ मसाले, चमड़े का सामान, विलायती वस्तुएँ और कपड़ा बाहर भेजा जाता है। इस नगर में कपड़ा बुनने, सूत कातने, चमड़े की वस्तुएँ बनाने और चीनी के बड़े बड़े कारखाने हैं।

गंगा तट पर यहाँ कई घाट बने हुये हैं। इनमें सिरसैया घाट मुख्य है। अन्य कवैला, महसोनिया, गऊघाट, राजघाट तिदवरिया, वनिया, तिवारी, बारी, सुखघाट, भैरोंघाट, श्मशान-घाट, मैगज़ीन घाट, अस्पतालघाट, परमटघाट और गोराघाट हैं।

उन्नाव

उन्नाव में केवल गंगा ही एक बड़ी नदी है जो इसकी पश्चिमी और दक्षिणी सीमा पर बहती हैं। किन्तु इसका प्रयोग न सिंचाई न व्यापार के लिये ही होता है। कानपुर के निकट इस पर रेल और सड़क का पुल बना हुआ है। पार जाने के लिये नाव का प्रबन्ध कई स्थानों पर है। किन्तु इसका प्रयोग

अधिकतर पैदल यात्री ही करते हैं। इसमें से किसी को भी हम व्यापार का मार्ग नहीं कह सकते हैं। सिंचाई के लिये इसका उपयोग न हो सकने का कारण तटों का ऊंचा होना है। इससे पानी को खेतों तक पहुँचाने के लिये कई बार उठाने की आवश्यकता पड़ती है। खेत भी गहरी धार से दूर पड़ते हैं। जिससे पानी ले जाने के लिये रेत पर रास्ता बनाना पड़ता है। इस विधि से रेत में बहुत सा जल नष्ट हो जाता हैं। गहरी धार अपना स्थान बराबर परिवर्तित किया करती है। इससे उसके तटवर्ती खेत भी स्थिर नहीं रह पाते हैं यह कठिनाई दक्षिणी भागों में अधिक है। यह सत्य है कि गङ्गा के छोड़े हुये सोतों से तराई की उपजाऊ भूमि में खेत सींचे जा सकते हैं। किन्तु इनकी संख्या कुछ अधिक नहीं है गङ्गा की गति उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। किन्तु कई स्थानों पर वह तेज़ी से मोड़ खाती है। ऐसे मोड़ सफीपुर तहसील में जाजमऊ और औरंगाबाद पर है, उन्नाव में शंकरपुर पर और डौंडिया खेरा में शेरपुर पर है।

गङ्गा तट पर मटियार भूमि बराबर चली गई है किन्तु उसमें कटाव हर साल होता रहता है। इसके बाद ही एक नीची भूमि का प्रदेश है। इसमें कुछ आबादी भी है किन्तु वार्षिक बाढ़ के प्रभाव के कारण अधिकांश उजाड़ पड़ा है।

बाढ़ से अधिक हानि खरीफ की फ़सल को पहुँचती है। रबी की फ़सल इस प्रदेश में भी अच्छी होती है। यह बात बाँगरमऊ और फतेहपुर चौरासी दोनों ही पर्गनों में देखने में आती है। इसका कारण यह है कि इसके लिये सिंचाई की

आवश्यकता नहीं पड़ती है। यदि आवश्यकता हुई भी तो पानी बहुत नज़दीक मिल जाता है। इसी तरह की तराई परियर और सिकंदरपुर के पर्गनों में भी पाई जाती है। परियर का अधिक भाग गंगा की तराई ही में स्थित है। इसमें गङ्गा के कई सोते हैं, और परिवर्तन बराबर हुआ करता है। यही बात किंदरपुर के बाबत भी कही जा सकती है। किन्तु उन्नाव पर्गने में तराई फिर सँकरी हो गई है। इसी कारण से कदाचित रेल का पुल यहां बना है। रेल के पुल के बाद फिर तराई चौड़ी होने लगती है। उन्नाव और हरहा के उजाड़ खंडों में घास, झाऊ और बबूल के बन हैं खरीफ की फसल का भाग हमेशा संशय में रहता है। बैसवाड़े पर्गने में भी आबादी कम है। बबूल के बन खड़े हुये हैं। बाढ़ का कोप इस प्रदेश पर हुआ ही करता है।

तराई उच्चतट के समीप जाकर समाप्त हो जाती है। इनके नीचे नीचे जलाशयों का एक सिलसिला चला गया है। कल्यानी इनमें होकर सफीपुर और नौरही में बही है। यह नदी गङ्गा में मरौंदा के निकट मिल गई है।

इस जिले में ऊसर जमीन बहुत पाई जाती है। सम्पूर्ण क्षेत्रफल का लगभग पंचमांश ऊसर ही है। इसी से कदाचित यहां बाग बगीचे बहुत हैं। तराई में शृगाल भेड़िये जंगली सुअर और सांप खूब पाये जाते हैं।

इस जिले के दक्षिण में डौंडियाखेरा नामक ग्राम गङ्गातट पर स्थिर है। इसे संग्रामपुर के नाम से भी पुकारते हैं। इसका इतिहास मनोरंजक है। जिस प्रदेश के अंतर्गत डौंडियाखेरा पड़ता है। इसका प्राचीन नाम बैसवाड़ा (बैस क्षत्रियों का प्रदेश)

है। बैस क्षत्रिय राजा शालिवाहन के वंशधर हैं। इस राजा ने उज्जैन के सुप्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य को हराकर अपना सम्बत् चलाया था जो शाक सम्बत् के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। शालिवाहन से बारहवीं पीढ़ी में राज अभयचन्द्र और पृथ्वीचन्द्र हुए एक बार ये शिवराजपुर के घाट पर गङ्गा स्नान के लिये गये। यहाँ अरगल की रानी भी स्नान के लिये आई। शिवराजपुर के हाकिम ने उसके खेमें पर धावा किया रानी ने बैस बन्धुओं से सहायता मांगी जिसे देना उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। युद्ध में पृथ्वीचन्द मारे गये किन्तु रानी कुशल पूर्वक अर्गल पहुँच गई। राजा ने कृतज्ञता पूर्वक अपनी कन्या का विवाह अभय चन्द के साथ कर दिया और दहेज में पांच गांव दिये। राजा अभयचन्द ने अपने राज्य को बढ़ाना आरम्भ कर दिया। डौंडियाखेरा के सामने गङ्गा के किनारे अभयपुर नामक ग्राम भी बसाया जो अब भी है। उसने फिर गङ्गा पार कर डौंडियाखेरा के भार लोगों को युद्ध में परास्त कर निकाल दिया और इस ग्राम का नाम संग्रामपुर रक्खा। अभयचन्द से दसवीं पीढ़ी में बाबू रामबख्स डौंडियाखेरा में हुये, इन्हें ब्रिटिश प्रजा के बध करने के अपराध में फांसी दे दी गई। इस वंश के कई वंशज रायबरेली और हैदरगढ़ में ताल्लुकेदार हैं। बैस लोग अपना मूल स्थान डौंडियाखेरा बतलाते हैं। अवध में यह सबसे उन्नतिशील, धनाढ्य और बढ़िया वस्त्र पहिनने वाले हैं। डौंडोयाखेरा में बाबू रामबख्स के किले के खंडहर अब भी देखने में आते हैं।

डौंडियाखेरा से तीन मील बकसर है। इसे बकस राक्षस ने

बसाया था। कहा जाता है बकस का बध श्रीकृष्ण भगवान ने द्वापर में स्वयं अपने हाथों किया था। यह राक्षस नागेश्वरनाथ महादेव का बड़ा भक्त था। उसने उनका एक मन्दिर भी स्थापित किया था। उस समय इस ग्राम का नाम बकसर राम था। वैस राजा अभयचन्द ने वक्तेश्वर महादेव के नाम पर इसका नाम बदलकर बकसर रख दिया। यहाँ श्री चन्द्रिकादेवी का मन्दिर है। चैत्र और आश्विन की अष्टमी को बड़ा मेला लगता है। शिवरात्री पर भी मेला लगता है। कार्तिकी पूर्णिमा को लगभग एक सहस्त्र मनुष्य स्नान के लिये आते हैं।

रायबरेली

रायबरेली की सीमा पर गङ्गा ५४ मील तक बहती है। गङ्गा के पेंदे की औसत चौड़ाई दो मील है, पर पश्चिम में दस मील तक यह अधिक चौड़ी है। इसमें बारहों महीने नाव चल सकती है और थोड़ा सा व्यापार इस मार्ग से होता भी है किन्तु वह पहिले की अपेक्षा बहुत कम है। गङ्गा पर इस जिले में एक भी पुल नहीं है। पार जाने के लिये नाव का प्रबन्ध कुछ स्थानों पर अवश्य है।

गंगा इस जिले में सरेनी पर्गना के मालिनपुर ग्राम में प्रवेश करती है। वहां से यह दक्षिण-पूर्व में बैरुआ की ओर बहती है। उत्तर की ओर मुड़कर उत्तर-पूर्व की ओर खजूर गाँव और डलमऊ को बहती चली जाती हैं, किन्तु गुआना के निकट दक्षिण की ओर घूम जाती है और कटरा बहादुरगंज में इस जिले के बाहर हो जाती है।

गङ्गा की सहायक नदियों में सब से प्रथम छोब है। यह

इटौरा बुजुर्ग जलविभाजक के दक्षिण से निकली है। सोलानो और डलमऊ की सीमा पर बहती हुई शाहजादपुर के निकट गङ्गा से मिल जाती है। दूसरी सहायक लोनी है। इसका उद्गम उन्नाव जिले में है। वहां से यह दक्षिण पूर्व में खीरों और सिमरी पर्गना की सीमा पर बहती हुई डलमऊ के निकट गंगा से मिल जाती है।

गंगा की तटवर्ती भूमि को इस जिले में कछार के नाम से पुकारते हैं। यह प्राचीन उच्च तट और गङ्गा के बीच में पड़ती है। इसकी चौड़ाई आमतौर से दो मील है, किन्तु जहां गंगा प्राचीन तट के समीप बहती है, वहाँ यह लोप हो जाती है। ऐसा सालों पर्गना के पश्चिमार्द्ध तथा कुछ अन्य स्थानों में हुआ है। कछार दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

एक तो गंगा के तटवर्ती चौरस मैदान जो बीच में सोते आ जाने से उच्च तट से पृथक हो गये हैं। इन सोतों में कहीं कहीं रेत भर गया है, और कहीं अब भी जल है। वर्षा में यह भाग जलमग्न रहता है। इसलिये इस पर केवल रबी की फ़सल ही हो सकती है। बाढ़ के क्षेत्र के अन्तर्गत होने के कारण यहां की भूमि में बराबर परिवर्तन हुआ करती है। बहुधा पहिले की उपजाऊ भूमि पर रेत जमा हो जाती है या रेत को चिकनी मिट्टी की एक तह आकर ढक देती है। किन्तु इस तरह के परिवर्तन बहुत शीघ्रता के साथ नहीं होते हैं। आमतौर से कछार के एक अच्छे भाग में कई वर्ष तक खेती होती रहती है। नई भूमि पर कई वर्ष तक खेती हो ही नहीं सकती है। जमा की हुई भूमि अक्सर चिकनी मिट्टी ही होती है। जब

यह हल चलाने योग्य हो जाती है तो इस पर खेती होने लगती है। किन्तु स्थायी रूप से कोई मनुष्य अपनी पूंजी इसमें नहीं लगाता है।

कछार का दूसरा भाग इस धारा और उच्च तट के बीच में स्थित है। इसके अधिकांश पर बाढ़ का प्रभाव नहीं पड़ता है। इसी से इसमें खेती बराबर होती रहती है। रबी की फ़सल तो हर साल बोई जाती है और थोड़ी बहुत खरीफ़ भी हो जाती है। इस भूमि का लगान भी अधिक देना पड़ता है क्योंकि इसमें सिंचाई की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है।

गंगा तट पर खजूरगांव एक अच्छा नगर है। यह इसी नाम के एक तालुके का सदर मुकाम है। गंगा पार जाने के लिये यहां एक नाव का प्रबन्ध रहता है।

यहां से पांच मील पर डलमऊ है। यह डलमऊ तहसील का सदर मुकाम है। रायबरेली से फतेहपुर जाने वाली सड़क यहां से निकली है। यहां की अन्य सड़कें सालों, इलाहाबाद, लालगंज और उन्नाव को जाती है। नगर एक ऊँचे टीले पर स्थित है। वर्षा ऋतु को छोड़कर वर्ष भर यह स्थान बड़ा स्वास्थ्यकर रहता है। यहां तीन बाजार हैं—चरायमंडी, टिकैत गंज और ग्लीनगंज। यहां से चमड़ा, तेलहन और गल्ला कानपुर भेजा जाता है। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां गंगा स्नान का बड़ा मेला लगता है। इसमें लगभग डेढ़ लाख मनुष्य भाग लेते हैं। जनश्रुति के अनुसार डलमऊ को राठौर राजा डालदेव ने बसाया था।

गंगा-दर्शन

फतेहपुर

गंगा इस जिले में सबसे प्रथम बिन्दकी पर्गना के उत्त भाग में प्रवेश करती है। वहां दक्षिण-पूर्व की ओर एक चौड़े पेंदे में होकर बहती है। खुसरोपुर के निकट उत्तर-पूर्व की ओर बहती हुई गौंटी के निकट इस जिले से बाहर हो जाती है। इस भाग में गंगा के तट पहिले की अपेक्षा अधिक स्पष्ट है। खादर की चौड़ाई भी कम है। जलाला से आगे इलाहाबाद तक इसकी चौड़ाई दो से पांच मील तक रहती है। इस भाग का क्षेत्रफल लगभग दो सौ नव मील है। नदी के निकट की भूमि अधिकतर रेतीली है। इसमें सिंचाई नहीं होती है। परिवर्तन भी हुआ करते हैं किन्तु उतने परिमाण में नहीं जितने कि ऊपर के जिलों में होते हैं। कहीं कहीं धारा के बीच में द्वीप बन गये हैं। किन्तु यह उजाड़ ही है। सुअर, नीलगाय और हिरन आदि जंगली पशुओं से पूर्ण हैं। नदी का धरातल ऊंचा होने के कारण कटी हुई भूमि कम परिमाण में है और वह ढालू भी कम है। इस समस्त भाग में कुये से सिंचाई हो सकती है। इस प्रदेश में ढाक, बबूल, रियोंज और छेकर के जंगल है। करैल, हिंगोट और करौंदा की झाड़ियां भी हैं। सरपत घास बहुत होती है। इन बनों में तेंदुये, भेड़िये, शृगाल और नील गायें पाई जाती हैं। यहां भेड़, बकरियां बहुत पाली जाती हैं।

गंगा तट पर शिवराजपुर एक अच्छा स्थान है। यहां से मौहर और बिन्दकी को पक्की सड़कें जाती हैं। एक कच्ची

सड़क औंग, देवमई और कोड़ा को गई है। आबादी अधिकतर गंगा तट पर ही है। लगभग एक मील तक मन्दिरों और घाटों की श्रेणी चली गई है। किन्तु इनमें से कोई भी दो सौ वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं है। लगभग सभी जीर्णावस्था में हैं। सभी ईंट और गारे के बनाये गये हैं। केवल एक नक्काशी किये हुये लाल पत्थर का है। इसके पास राजा हिम्मत 'बहादुर गोसाईं' का बनवाया हुआ जगन्नाथ का मन्दिर है। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां बड़ा मेला लगता है।

इलाहाबाद

फतेहपुर जिले के उत्तरी सिरे को पार करने के बाद गंगा नदी २३ मील तक इलाहाबाद जिले की सिराथू और इलाहाबाद तहसीलों की उत्तरी सीमा बनाती है पहले कुछ दूर तक रायबरेली और फिर परताबगढ़ जिले को गंगा नदी इलाहाबाद से अलग करती है। पट्टी नागौर के पास गंगा नदी इलाहाबाद जिले में प्रवेश करती है। गंगा नदी पेंदे में अक्सर अपना मार्ग बदलती रहती है। अफजलपुर सातों के बाद गंगा-तट पर कड़ा और शाहजादपुर के पुराने कस्बे पड़ते हैं। इस के आगे गंगा का मार्ग बहुत मोड़दार हो जाता है। गंगा से कुछ दूरी पर कोहखिराज का गाँव (लगान देने वाला) कोहइनाम (लगान न देने वाले) गाँव से मिल गया। गदर में कोई बागी लोग हो गये। तब उन का गांव ज़ब्त कर लिया गया। यहाँ से गंगा के उस पार नौबस्ता जाने को नाव मिलती है। कोह खिराज और बनंढी के आगे गंगा उत्तर में सोराँव तहसील को दक्षिण की

इलाहाबाद तहसील से अलग करती है। उत्तर की ओर गंगा तट पर सिगरौर (सृंगवेरपुर) पुराना स्थान है। ऊँचे तट पर एक पाठशाला बनी हुई है। पास ही एक पुराना खम्भा बना हुआ है जिसके ऊपर से शायद पुराने समय में इलाहाबाद शहर को झंडी और नगाड़े द्वारा सन्देश भेजा था। सिंगरौर के मरघट घाट में मगर बहुत हैं। लेकिन वे घाट पर स्नान करने वाले यात्रियो को नहीं छेड़ते हैं।

फाफामऊ के पास गंगा अचानक कुछ उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। फाफामऊ में ही ईस्ट इंडियन रेलवे का गंगा के ऊपर पुल बना है। यहाँ पर सड़क का भी पुल है। फाफामऊ से, एक लाइन रायबरेली दूसरी प्रतापगढ़ को, और तीसरी जौनपुर बनारस कोगई है। फाफामऊ के पास से गंगा फिर संगम और किले के पास तक दक्षिण की ओर मुड़ती है। गंगा और यमुना का संगम पहले किले के ठीक पास था। अब किले से कुछ दूर हट गया है। संगम के पास गंगा की धार बहुत तेज हो गई है। गङ्गा का सफेद मटीला जल यमुना के गहरे नीले जल से एकदम भिन्न मालूम होता है। कुछ दूर तक दोनों जल एक दूसरे से लड़ते झगड़ते अलग मालूम होते हैं। अंत में गंगा के जल की प्रधानता हो जाती है। संगम के पास गंगा के उस पार झूसी या प्रतिष्ठानपुर इलाहाबाद से भी पुराना स्थान है। यहाँ गंगा तट पर साधुओं की कुटियाँ और पाठशाला है। यमुना पार अरैल है। यहाँ शिवरात्री को मेला लगता है। संगम सदियों से भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध रहा है। भरतवर्ष के दूर दूर भागों

में बसे हुये हिन्दू प्रयाग के संगम पर स्नान को लालायित रहते हैं। प्रत्येक वर्ष मकर संक्रान्ति के अवसर पर यहाँ मेला होता है। हर छठे वर्ष अर्द्धकुम्भी और बारहवें वर्ष कुम्भ के अवसर पर स्नान करने वाले यात्रियों की संख्या कई लाख हो जाती है। राजा हर्ष के समय में यहाँ पर करोड़ों रुपयों का दान होता था। आजकल देश में दरिद्रता होने पर भी यहाँ, हर साल हजारों रुपयों का दान होता है। इलाहाबाद से झूसी जाने के लिये गङ्गा के ऊपर बङ्गाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का पुल बना है। नावों का पुल बाढ़ घटने पर हर साल बनता है और वर्षा की बाढ़ आने के पहले ही तोड़ दिया जाता है।

यमुना के ऊपर इलाहाबाद से नैनी और आगे हावड़ा जाने वाली ईस्ट इण्डियन रेलवे का पुल सब से अधिक सुन्दर और मजबूत है। पुल दुहरा है। इसके ऊपर वाले खंड पर रेलवे जाती है। एक (पश्चिम की ओर वाली) लाइन पर रेल गाड़ी नैनी से इलाहाबाद को आती है। दूसरी पर इलाहाबाद से नैनी को जाती है। नीचे वाले खंड में दुहरी सड़क है। पुल से संगम का दृश्य बड़ा मनोहर लगता है। सूर्योदय के समय यह दृश्य और भी अधिक सुन्दर हो जाता है सूर्यस्त के समय यमुना की ओर वाला भाग बहुत सुहावना लगता है। इसी ओर करेला बाग के पास पानी में उतरने वाले हवाई नावें उतरती हैं। संगम के आगे गंगा फिर दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। गंगा के उत्तर में फूलपुर और हंडिया तहसीलें हैं। दक्षिण की ओर करछना और मेजा।

गंगा-दर्शन

टौंस के संगम के पास सिरसा नगर है। सिरसा और इलाहाबाद के बीच नावें अक्सर भारी सामान लाती रहती हैं। सिरसा के सामने गंगा के बायें किनारे पर लच्छागिर एक पुराना प्रसिद्ध स्थान है। इस ओर गंगा के किनारों पर रेतीले टीले हैं। बाढ़ के दिनों में धार अक्सर अपना स्थान बदल देती है। इस पार और उस पार के बीच में धार का-धुरा (सीमा) माना जाता है। इससे गाँव वालों में हद बन्दी के ऊपर झगड़ा भी हो जाता है। जमनीपुर को इस तरह के झगड़े के कारण आराजी मुतनाजा (झगड़े का क्षेत्र) कहते हैं। बाढ़ के दिनों में गंगा का पानी दूर तक फैल जाता है। समुद्र ताल से इसकी ऊँचाई २४५ फुट हो जाती है। एक बाढ़ में यह ऊंचाई २८० फुट के ऊपर हो गई। बाढ़ घटने पर गंगा की चौड़ाई सिकुड़कर बहुत थोड़ी रह जाती है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई केवल २३७ फुट रह जाती है। कई स्थानों पर गहराई इतनी कम हो जाती है कि आदमी बिना नाव की सहायता के ही पैदल इसे अकबरपुर, शहजादपुर, कोहइनाम, संजेत, पट्टी नरवर कोराई उजहनी, उजहनी पट्टी कासिम, उमरपुर, निरावन, दारागञ्ज, अरैल, लवाइन, मनैया, डीहा, लकटहा, सिरसा बिजौर, कदरा मकुन्दपुर, परनीपुर, चौखटा और डीगरपुर में गंगा पार करने के घाट हैं। यहाँ गगा पार करने के लिये नाव मिलती है।

गंगा में मिलने वाले नाले भी अपना स्थान बदलते रहते हैं। एक नाले का नाम इसी से बैरगिआ पड़ा। इनमें केवल बरसात में पानी रहता है। और ऋतुओं में वे अक्सर सूखे पड़े रहते हैं।

इलाहाबाद जिले में ५८ मील बहने के बाद गंगा नदी मिर्ज़ापुर ज़िले में प्रवेश करती है।

मिर्ज़ापुर

इस जिले में गंगा पहले पहल भदोही पर्गना के करौंडिया ग्राम में प्रवेश करती है। यहाँ पर एक चक्कर खाकर दो मील लम्बा प्रायद्वीप बनाती है। वहाँ से यह कुछ टेढ़ी होकर पूर्व की ओर बहती है विंध्याचल होती हुई मिर्ज़ापुर से उत्तर की ओर घूम जाती है। कुछ दूर जाकर दक्षिण की ओर घूमती है किन्तु चार ही मील आकर फिर पूर्व की ओर बहने लगती है। चुनार से इसका बहाव उत्तर-पश्चिम को हो जाता है और बनारस से छः मील इधर ही इस जिले की सीमा का अन्त हो जाता है। यदि एकसिर से दूसरे सिरे तक नापा जाय तो गंगा की लम्बाई इस जिले में केवल ५६ मील है किन्तु मोड़ों के कारण ८४ मील हो जाती है।

नदी का पेंदा बिलकुल रेत और कंकड़ का है दक्षिण तट ढालू है। यह कंकड़ की तह पर स्थित है, जिस पर साधारण दुमट जमीन का एक कगार है। किन्तु यह नालों द्वारा जो इस ओर से आकर इसमें मिले हैं टूटा हुआ है। इनमें से मुख्य जिरगो है जो चुनार के निकट मिला है। विलवा, दहवा, खजूरी लिगडा और करनौटी हैं। बहुत साल से गंगा किनारे को तोड़ रही है। किन्तु कोई बहुत उद्दंड या शीघ्र तोड़ नहीं हुआ है। पश्चिमी तट उपजाऊ मिट्टी का बना हुआ है। जिसमें होकर एक सोता आकर यहीं मिला है। हर साल इस पर

आकर उपजाऊ मिट्टी जमा होती है जिस पर पानी के स्थान तक खेती होती है जिसमें जाड़े की फ़सलें और बोरो धान उगाया जाता है।

बरसात में बाढ़ का जल ३८ से ४० फुट तक ऊँचा उठ जाता है। वर्षा ऋतु में चढ़ाव-उतार का दैनिक परिमाण जार्डिन स्किनर ऐन्ड कम्पनी अपनी वरिवा घाट वाली फैक्टरी में नोट करती है। गंगा की धार जो जाड़े और गरमी में केवल पाव मील चौड़ी रहती है वर्षा में एक चौड़ी और तेज धार हो जाती है। साधारणतया इसका इतना विस्तार नहीं होता है कि पास पड़ोस के गांव डूब जाँय। किन्तु सन् १८६१ और सन् १८७५ में जो बाढ़ें आई थी उनमें गंगा ५३ फुट ९इंच और ५१ फुट १० इंच तक बढ़ गई थी किन्तु उस साल से सबसे ऊँचा स्थान ४८ फुट रहा है— इन सब समयों पर उत्तर की ओर का देश जलमग्न हो गया था। पशु और सम्पत्ति की बहुत हानि हुई थी। गंगा पर सब आकार की देशी नावें चल सकती हैं किन्तु गरमी में नाव चलाना कठिन और दुःखदाई हो जाता है। इस समय गहरी धार नाव चलाने योग्य उस रुपये से रक्खी जाती है जो राजघाट बनारस में चुंगी वसूल करने वाला कलेक्टर देता है। वर्षा में कोई कठिनाई नहीं होती है।

बनारस

गंगा बनारस जिले में बेतावर नामक ग्राम में प्रवेश करती है। यहीं सुभा नाला आकर इसमें मिली है। यहां से सात मिल

तक गंगा बनारस और मिर्जापुर की सीमा पर बहती हैं। यहां से बनारस और चन्दौली तहसीलों की सीमा बनाती हुई गुमती संगम तक जाती है। नदी की प्रगति अर्द्धगोता का वृत्त जनाती हुई हैं।

इसके तट बाहर को ओर ऊँचे हैं। किन्तु अन्दर की ओर रेती अधिक हैं। जिस पर झोपड़ा बनाने की घास के सिवा कुछ भी नहीं होता है। कही कहीं पर बाढ़ में उपजाऊ मिट्टी आकर जमा हो गई है। जहां वहीं रेत के नीचे मिट्टी है वहां खरबूजे बोये जाते हैं। जिले के प्रथम भाग में इसकी गति उत्तर की ओर है यहाँ दाँया उच्च तट कंकड़ का है। जिसमें कटाव कम होता है मुख्य धार इसके निकट ही बहती है। इससे हवा तेज चलने पर नाविक भय खाते हैं। और कई दिन तक नावें रोके पड़े रहते हैं। बायाँ तट जो देहर अमानत के दक्षिण में मुन्डादेव तक ढालू और अपरिवर्तनशील है। अब रेती में परिवर्तित हो जाता है। वर्षा में यह सब जलमग्न हो जाता है। रामनगर के बाद गंगा अपना दूसरा बड़ा मोड़ उत्तर पूर्व की ओर खाती है। यहां से गंगा बायें तट की ओर चली जाती हैं। यहां चौड़ी और गहरी है, और असी संगम से वह ऊंचा कगार उठने लगता है। जिस पर बनारस के घर और महल स्थित हैं। दांयी ओर रेती का वह मैदान पड़ता है, जो रेती और उच्च बाढ़ तक फैला हुआ है। रेल के पुल से नदी तट तक पूर्व ही की ओर बहती है। धार उत्तर या बांये तट तक ही रहती है। यह तट बरना संगम से कुछ दूर आगे तक काफी ऊंचा रहता है। कंकड़ की बहुत सी उन भीतों के कारण इसमें

परिवर्तन होने की सम्भावना नहीं है, जिसमें से कुछ जलमग्न हैं। यह इस स्थान को आने जाने के लिये बड़ा भयानक बना देती है।

तातेंपुर के निकट धार फिर दूसरे तट की ओर जाने लगती है और यह तट नीचा और रेतीला हो जाता है। किन्तु दक्षिण की ओर का तट पानी सोखने वाली धरती में परिवर्तित होने लगता है। किन्तु यह कुछ विशेष ऊंचा नहीं होता है और बाढ़ का जल इससे ऊँचा उठ जाता है। कैली में गंगा फिर उत्तर की ओर मुड़ती है, और बलुआ तक इसी ओर बहती चली जाती है। कैली से कन्वर तक लगभग पांच मील दाँया तट उसी सोखने वाली मिट्टी का रहता है, किन्तु फिर यह ऊंची कंकड़ की भीत में परिवर्तित होने लगता है। जिनसे नावों को फिर एक अदृश्य भय का सामना करना पड़ता है। किन्तु बलुआ से कन्वर धारा और उच्च तट के मध्य में एक उपजाऊ मिट्टी की अच्छी पट्टी है, जो यहां कुछ दूर तक अन्दर होती जाती है। इस मोड़ के अन्दर जाल्हूपुर परगना में नीची भूमि का एक कई मील चौड़ा फैलाव है। इस के बीच में से एक धार बही है जो कैली मोड़ द्वारा बनाये हुये कोण को काटती हुई वर्षा में चार ग्राम का एक टापू छोड़ती है, जिसमें से मुख्य मुकुटपुर है। यह द्वीप बहुत समय का मालूम पड़ता है। कम से कम १८३३ से इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। जब इसका वर्णन बनारस के कलेक्टर ने फोर्ट विलियम के मैरीन बोर्ड को एक पत्र लिख कर किया था। उस समय और अब भी यह धारा वर्ष के अधिक भाग में सूखी ही रहती है किन्तु वर्षा में इसमें नावें

चलती हैं। बाढ़ में इसका बहुत सा भाग जलमग्न हो जाता है, किन्तु सम्पूर्ण तो कदाचित् ही होता हो। किन्तु ऐसा कभी नहीं हुआ कि गाँव डूब गये हों। यह धारा गंगा से बलुआ के कुछ ऊपर फिर मिल जाती है। बलुआ से गंगा की गति उत्तर पश्चिम हो जाती है। क्योंकि कंकड़ का एक ऊँचा तट इसे उस ओर लौटाता है। वर्षा में इसका कुछ भाग डूब जाने के कारण, नावों को भय रहता है। विशेषकर इस लिये कि पानी भी कुछ अधिक गहरा नही है। बायां तट नीचा और रेतीला ही रहता है यह हाल जाल्हूपुर और कटिहर तक रहता है। पिछले वर्षों में यहाँ जमीन को काफी नुक़सान पहुँचा है। नदी उत्तर की ओर मुड़ती है। और फिर उत्तर पूर्व की ओर और कटिहर के नीचे का नीचा मैदान जहां हर साल बाढ़ में अच्छी मिट्टी जमा होती है। यहां से ऊँचे और रेत के तट में परिवर्तिन होने लगता है, जिसके बीच में कंकड़ भी हैं। उच्च तट के नीचे यदा कदा एक खादिर की पट्टी भी मिलती है, जिसमें जाड़े में कृषि भी होती है किन्तु वर्षा में डूब जाती है। मोड़ की धार के दूसरी ओर बारा पर्गना में तट नीचा और रेतीला है, यहाँ बाढ़ में पानी भर आता है। बारा पर्गना के उत्तर में कुछ मील तक गंगा बनारस और गजीपुर की सीमा के बीच में बहती हैं। और सैफ़पुर ग्राम में उस जिले में प्रवेश कर जाती है। धार की गति इस जिले में गर्मी में दो मील प्रति घंटा से भी कम और वर्षा में पाँच मील के औसत तक रहती है, इसकी कमी वेशी गहराई पर निर्भर है। वार्षिक बाढ़ में यह २८ फुट तक पहुँच गई है, किन्तु कुछ अवसरों पर तो इससे बहुत ज्यदा हो गई है।

बाढ़ आने से कोई विशेष हानि नहीं होती है खादर के किसान तो उगी उगाई कृषि के भी नष्ट कर देने पर इसका स्वागत करते हैं। क्योंकि उससे जो लाभ होता है उसके सन्मुख यह क्षणिक हानि कुछ भी नहीं हैं।

गाजीपुर

गंगा इस जिले का स्पर्श सैदपुर पर्गना के धुर दक्षिण-पश्चिम में करती है और कुछ मील तक बनारस और गाजीपुर की सीमा बनाती है। पहिले दो मीलों के पश्चात् यह अपना रुख औरिहार की ओर बदल देती है। दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती हुई अपना यह रुख धानापुर के निकट एक स्थान तक रखती है। यहाँ यह पाँच मील के लिये उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। सैदपुर में नारी पचड़ियोरा के निकट धारा उत्तर तट की ओर लौटती है। वहां से एक तेज़ मोड़ लेकर दक्षिण-पूर्व की ओर, चौचकपुर और पहाड़पुर के निकट बहती हुई, साधारणतः दायें किनारे की ओर बहती है। कारन्दा के धुर दक्षिण में नदी एक बड़ा मोड़ खाती हुई पहले उत्तर में जमनिया की ओर बहती है फिर उत्तर-पश्चिम में मैनपुर और गंगी संगम तक। इस प्रकार यह करन्दा के तीन ओर की सीमायें बनाती है। मुख्य धारा यहां बांयी ओर रहती है। किन्तु तट न तो पुख्ता न ऊँचा है। मैनपुर से गंगा उत्तर की ओर हो जाती है, और उस कंकड़ की भीत के निकट बहती है। जिस पर गाजीपुर स्थित है। किन्तु गाजी पुर से कुछ मील आगे धारा दक्षिण-पूर्व की ओर नीची मिट्टी के एक चौड़े मैदान में होकर बहती है। बहुत वर्षों तक

पानी तीन धाराओं में बिभक्त होकर बहता था। यही शेरपुर खेतीपुर तालुके थे। यह धारायें बारा के निकट मिल जाती थीं किन्तु पानी अब सब दायी ओर की धारा ही में आ गया है और बाकी दोनों रेत से भर गये हैं। इस तरह जमनिया से बारा तक नदी एक बड़ा घेरा बनाती है जिसमें जमनिया पर्गना आ जाता है और जिसके केन्द्र में गाजीपुर का नगर स्थित है। बारा से धारा कम चौड़ी होने लगती है। और पूर्व की ओर शाहाबाद में चौसा तक बहती है। यहाँ से यह उत्तर पूर्व में बकसर की ओर बढ़ती है, और इस जिले के मुहम्मदाबाद पर्गने को विहार प्रान्त की पृथ्वी से पृथक करती है। रसूलपुर पर यह बलिया में प्रवेश कर जाती है। इस जिले में इसकी कुल लम्बाई ६४ मील है।

बलिया

गंगा इस जिले का स्पर्श गाढ़ा पर्गना के धुर दक्षिण करती है। वहां यह करताडोह और बकसर के बीच में बहती है यह दोनों कंकड़ की ऊँची भीतों पर स्थित है। इसके उपरान्त गंगा का मार्ग उपजाऊ प्रदेशों में है। जिसका बराबर कटाव हो रहा हैं और पुनर्निर्माण भी होता है। आगे ६४ मील पर दीनापुर तक एक भी स्थायी स्थान नहीं हैं। बक्सर से यहां तक नदी एक सीधी पंक्ति में जाती है। नदी द्वारा जो परिवर्तन किये गये हैं वे बड़े विशाल रूप में हैं वर्तमान समय के एक नकशे से पचास वर्ष पहिले के नकशे से तुलना करने पर इस जिले के दक्षिण में आश्चर्यजनक परिबर्तन हुये हैं। पुराने स्थान सब

बह गये हैं, और प्राकृतिक विशेषतायें अब नहीं पहिचानी जा सकती हैं। नदी का गिराव थोड़ा है, और तट जो मिट्टी से ढके हुके अस्थिर रेत के हैं कुछ इंच से कुछ फिट तक बने हैं, धारा का ठीक प्रकार से मुकाबिला करने में असमर्थ हैं। बकसर से पूर्व की ओर गङ्गा मोड़ों का एक समूह है, जिसमें से प्रत्येक उसी दशा में कुछ वर्षों तक स्थिर रहता है। यद्यपि इनकी सीमायें कई मील तक घटा बढ़ा करती हैं। स्थायी तट जो जल्दी से नहीं कट सकते, एक दूसरे से एक से बीस मील तक के अन्तर पर स्थित हैं इन दोनों सीमाओं के बीच में धार का स्थान ऐसे ही परिवर्तित हुआ करता है जैसे हवा में उड़ते हुये झण्डे की तहें एक ओर तो नदी उन उपजाऊ निर्माणों को काटती है जहाँ वह मनुष्य के स्मरण में पहिले कभी नहीं आई, और बड़ी निर्दयता से ग्रामों और उद्यानों को उजाड़ रही है तो दूसरी ओर वह एक नये दियारे को फेंक रही है। एक स्थान पर यह बलिया की ओर बढ़ रही है तो थोड़ा नीचे घूम जाती है और शाहाबाद में काटती हुई उत्तर में नई जमीन के विस्तृत मैदान में जा रही है। यह परिवर्तन दोआबा पर्गना में विशेष तथा बड़े हैं, लगभग यह सम्पूर्ण वर्षा में जलमग्न हो जाता है। जाड़े में यही भूखंड खेतों से लहलहा उठता है जिसमें न तो ग्राम न सीमा वाले वृक्षों के समूह ही दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे समय में (जब यह स्थान बहुत विस्तृत हैं, या ऐसी भूमि के बहुत दूर हों जो नहीं डूबती) ग्रामों का कोई अस्तित्व नहीं है।

शाहाबाद

गङ्गा इसकी उत्तरी सीमा पर बहती है और इसे गाजीपुर

बलिया और सारन जिलों से पृथक करती है। यह शाहाबाद का स्पर्श चौसा के निकट उस स्थान पर करती है जहाँ इसका कर्मनासा से संगम होता है। वहां से यह उत्तर-पूर्व में बक्सर की ओर बहती है बलिया पहुँच कर यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। सपही के निकट यह फिर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ जाती है और हल्दी के सामने से इसकी गति पूर्व की ओर हो जाती है। यह गति इसकी सोन संगम तक रहती है जहाँ यह इस जिले का परित्याग करती है। इसकी दक्षिण की सहायक कर्मनाशा, थोरा, थूरी, गङ्गी और सोन हैं जिसमें से पहिली और अन्तिम ही अलग वर्णन करने के योग्य है। गङ्गा अपने इस भाग में अपने स्थान को बराबर बदलती रहती हैं बड़े बड़े भूखण्ड मिट्टी जमा होने से बनते हैं। कभी कभी तो यह स्थायी हो जाते हैं किन्तु साधारणतः दूसरे वर्ष बह जाते हैं। बिहार के इस खंड का वर्णन चीनी यात्रीह्वान सांग ने किया है। वह भारत में सातवीं शताब्दी में आया था। उससे पता चलता है कि गङ्गा उस समय आजकल से कहीं अधिक दक्षिण में बहती थीं। मासर का नगर जिसे वह गङ्गा के तट पर बतलाता है, अब नौ मील की दूरी पर है किन्तु पुराने पेन्दे का उच्च तट अब भी स्थित है, और वह बसर भोजपुर, बिलौरी, बिहिया आरा और कोयलवर के निकट अब भी है। सन् १८६० से गङ्गा धीरे धीरे फिर दक्षिण की ओर बढ़ रही हैं। बक्सर तहसील में जहाँ तट कड़ी मिट्टी के बने हुये हैं साधारणतया ऊँचे हैं किन्तु नीचे की ओर जहाँ धारा उनमें टक्कर मारती है वे ढालू हो गये हैं। गर्मी में धारा का विस्तार पौन मील का रह जाता

है किन्तु वर्षा में यह इसका कई गुना हो जाता है। गङ्गा पर खूब व्योपार होता है, किन्तु दक्षिण तट पर बक्सर और चौसा दो ही मुख्य स्थान हैं।

पटना

गङ्गा इस जिले की उत्तरी सीमा पर बहती है जो सोन संगम से दुनारा ग्राम तक है। इसकी लम्बाई ९३ मील है। गंगा की धारा बराबर बदलती रहती है। उसमें एकवर्ष द्वीप बन जाते हैं जो दूसरे वर्ष बह जाते हैं। इससे इसके प्रत्येक वर्णन को दूसरे वर्ष ठीक करने की आवश्यकता रहती है।

गङ्गा एक पवित्र नदी है। पटना में हिन्दू उसकी पूजा फूल, मिठाई और बकरों से करते हैं—बकरे कभी कभी जीवित ही गंगा में फेंक दिये जाते हैं और उन्हें मल्लाह उठा ले जाते हैं। धनवान उसमें एक ओर से दूसरी ओर तक कपड़ा बांधते हैं। यह सब गंगा पुत्रों को मिलता है। कुछ साधू महात्मा जलशयन करते हैं जो माघ के महीने में होता है। चार बांस गङ्गा में गाड़ दिये जाते हैं जिनके ऊपर एक छोटा सा चबूतरा बना होता है। इस पर साधू रात भर बिल्कुल नग्न होकर माघ के कड़कड़ाते हुये जाड़े में बैठ कर तपस्या करते हैं।

सारन

गंगा इस जिले की दक्षिण सीमा पर बहती है। यह छपरा के कुछ नीचे घाघरा संगम से सोनपुर के निकट गंडक संगम तक है। जाड़े में इसकी चौड़ाई औसत से एक मील होती है। किन्तु वर्षा में तो कहीं कहीं यह नौ दस मील तक चौड़ी हो

जाती है। सन् १८४९ से इसमें बड़े बड़े परिवर्तन हुये हैं जब इसका माप पटना से घाघरा संगम तक हुआ था। बहुत से रेत के तट हैं और धारा में काफी बड़े बड़े टापू हैं जिनका वर्णन करना असंभव और व्यर्थ है क्योंकि वे अक्सर लुप्त हो जाते हैं या फिर बन जाते हैं। सोनपुर से छपरा तक तट ऊँचे और बाढ़ से ऊपर रहते हैं किन्तु इनके पीछे का भाग नीचा है इन तटों के बीच के नालों से बाढ़ का पानी इस भूखंड में आ कर चौर और दलदलों में भर जाता है जो इसजिले में इतने विशेष रूप से हैं। महेन्द्रपुर, शेरपुर और पन्दपुर पर पार करने ये लिये नाव मिलती हैं। बी० एन० ई० आर० के सम्बन्ध में पहलेजा घाट और दीघा घाट के बीच में स्टीमर भी चलता है।

मुजफ्फरपुर

गंगा इस जिले की दक्षिण सीमा पर लगभग बीस मील तक बहती है। हाजीपुर के निकट सिकलारीपुर के पास बड़ी गंडक का संगम हैं। ई० आई० आर० पर वख्त्यारपुर से धुर उत्तर की ओर यह एक ऐसा स्थान है जहाँ बिना नाव के नदी को पार नहीं कर सकते। धारा एक मील चौड़ी रहती है किन्तु वर्षा में इसका विस्तार बहुत अधिक हो जाता हैं।

मुंगेर

गंगा इसजिले में १२ लील बहती है। यह इसका स्पर्श सबसे प्रथम बछवारा रेलवे स्टेशन से कुछ मील पश्चिम में करती है। यह स्थान पटना जिले के बाढ़ के बिल्कुल सम्मुख

पड़ता है। वहाँ से इसकी गति ३० मील पर सूरजगढ़ तक दक्षिण-पूर्व की रहती है। मुंगेर के पठार के पास यह एक तेज घेरा डालती है। वहाँ से यह बारह मील के लिये दक्षिण की ओर मुड़ती है और फिर वहाँ से पाँच मील के लिये पूर्व की ओर मुड़ती है। जिसके बाद यह इस जिले को त्याग कर भागलपुर में चली जाती है। इस जिले में यह साल भर गहरी और चौड़ी रहती है। वर्षा में यह उत्तर में फरकिया परगने में बीस मील तक अपना पानी नीचे ये भूखंडी पर फैला देती है। कहते हैं पश्चिम में वर्तमान धारा के स्थान से पुराने समय में धारा दस मील उत्तर थी। पूर्व में यह कई बार उस चट्टान के (जिस पर मुंगेर का किला है) पश्चिम और पूर्व की ओर बदल चुकी है। इसमें इसने दियरा के बड़े बड़े खंडों का निर्माण किया है या उन्हें बहा ले गई है। किन्तु बहुत समय से धारा दुर्ग के उत्तर भाग के पास ही रही है।

भागलपुर

गङ्गा भागलपुर जिले में सबसे प्रथम तुलसीपुर में प्रवेश करती है और मुंगेर के फरकिया परगने और भागलपुर के जहाँगीर! परगने के बीच में बहती है। इस जिले में इसका ठीक प्रकार से प्रवेश सुल्तानगंज ग्राम के सामने होता है। यहाँ से आगे यह दो चक्कर खाती हैं। पहला तो भागलपुर के नगर के उत्तर में और दूसरा कोलगाँव के दक्षिण में जहाँ यह एक पहाड़ियों की श्रेणियों से मिलती है जो इसे उत्तर की ओर लगभग आठ मील के लिये मोड़ देती है। जब यह पत्थर घाट पहुँचती है तो इसमें कोसी और उत्तर की सब सम्मिलित

नदियों का पानी आकर मिलता है। गङ्गा में इस सम्पूर्ण जिले में नावें चल सकती हैं। काफी बड़े स्टीमर भी चल सकते हैं। पेंदे की औसत चौड़ाई तीन मील है किन्तु गर्मी में केवल आध मील रह जाती है। वर्षा में समग्र तट जलमग्न हो जाता है। पाँच से दस मील तक उत्तर में और एक से दो तक दक्षिण में जल फैल जाता है।

मालदा

राज्ञ महल की पहाड़ियों से निकल कर गंगा मालदा जिले में प्रवेश करती है। राजमहल से दो मील नीचे गंगा में से छोटा भागीरथी नामक एक धारा निकलती है। यह गंगा का एक पूर्व मार्ग मालूम पड़ती है और गंगा के सामन ही पवित्र मानी जाती है। थोड़ी दूर और नीचे गंगा में से पगला नामक एक नदी और निकलती है इसमें छोटी भागीरथी जाकर मिल जाती है। जहाँ से गंगा इस जिले का परित्याग करती है उससे थोड़ा ऊपर ही इसमें से एक नदी भागीरथो नामक निकलती है। मुख्य धार की पवित्रता इस स्थान के बाद कम मानी जाने लगती है। पूर्वी बंगाल से नावें गंगा का पवित्र जल लेने के लिये तांतेपुर आती है। क्योंकि पवित्र नदी से यही स्थान इन्हें सबसे निकट पड़ता है।

मुर्शिदावाद

भागीरथी—भागीरथी गंगा से फरक्का नामक स्थान से पच्चीस मील दक्षिण बूरपुर नामक ग्राम के पास पृथक होती है।

लगभग दो मील तक सूती के निकट विश्वनाथपुर तक साथ हो जाती है। किन्तु विश्वनाथपुर के आगे टेढ़ी मेढ़ी होकर दक्षिण की ओर जाती है। यह इस ज़िले का परित्याग सासी के ऊपर बीधूपारा नामक ग्राम पर करती है। यह इस ज़िले को दो भागों में विभक्त करती है। इसके तटों पर विशेष कर पूर्वी पर ही इस जिले सब ऐतिहासिक और समृद्ध नगर स्थित हैं। साल में चार महीने (जब यह पानी से भरी रहती हैं) बड़ी सुन्दर प्रतीत होती है।

पद्मा—पद्मा इस ज़िले के धुर उत्तर में प्रवेश करती है। वहाँ से दक्षिण-पूर्व में बहती हुई इसे माल्दा और राजशाही ज़िलों से पृथक करती है। धारा की गति जाड़े में तीन मील प्रति घंटा और वर्षा में छः मील प्रति घंटा हो जाती है। कहीं कहीं पर (जहाँ गंगा मोड़ पर आती है) यह गति बहुत बढ़ जाती हैं। नावें और स्टीमर धार के विरोध में चलने में काफी कठिनाई का अनुभव करते हैं। आधी मई से आधे अगस्त तक मुख्य धार का पानी बत्तीस फुट तक ऊँचा हो जाता है। फिर तट के भाग साफ़ किये जाते हैं, आबाद होते हैं। खेती होने लगती है। बन्दोबस्त होता है। दस बारह साल तक मालगुजारी वसूल होती है। फिर एक साल बाढ़ में सब जलमग्न हो जाता है।

महानन्दा संगम के कई मील नीचे तक पद्मा के तट सख्त मिट्टी के बने हुये हैं। जिन पर पानी का प्रभाव कम पड़ता है। किन्तु रामपुर बोआलिया के कुछ मील उत्तर-पश्चिम से ज़मीन

रेतीली हो जाती है और बहुत जल्दी कट जाती है। पहले नगर में पानी काफी भर जाता था और पचीस वर्ष पहेले सिविल स्टेशन का एक अच्छा भाग बह गया था। अब नगर को बचाने के लिये बांध बना हुआ है। भागीरथी के उद्गम से मेघना संगम तक इसका नाम पद्मा रहता है। लगभग चार सौ वर्ष पहिले तक गंगा की मुख्य धार भागीरथी में होकर बहती थी। इस धारा में मिट्टी भर जाने पर उसने दूसरा मार्ग जलंग, मतभंगा और गरई में पाया। इस कारण पद्मा का वर्तमान मार्ग अभी हाल ही का है। पद्मा एक छोटी नदी का नाम है जो बारिन्द में गोदावरी के निकट से निकलती है। संभव है कि गङ्गा ने इस धार और नाम का उपयोग अपने लिये किया है। इस भाग में गंगा पवित्र नदी नहीं है। लोग लकीर के फकीर तो होते ही है इस कारण प्राचीन मार्ग को ही पवित्र मानते हैं। यह होते हुये भी गंगा की शान में कुछ भी कमी नहीं आती है। न तो वह वर्षा में एक नाशकारी धार ही हो जाती हैं और न गर्मी में उसमें कोई विशेष कमी ही होती है।

ढाका

गंगा इस जिले की सबसे बड़ी नदी है। यह ब्रह्मपुर और पद्मा के संगम से बनी है। नीचे इसका नाम कीर्तिनास पड़ गया है। क्योंकि इससे बहुत हानि फरीदपुर जिले में पहुँची है। ब्रह्मपुत्र सांपू है और इसका उद्गम तिब्बत में है। जहाँ से इन्डस और सतलज निकली है। वे छोटे नाले जिन पर राजकारी स्थित है अब भी ब्रह्मपुत्र के नाम से विख्यात हैं।

गंगा-दर्शन

टिपरा

गंगा का नाम यहाँ मेघना पड़ जाता है। यह इस जिले में चान्दपुर पर प्रवेश करती है इसकी धारा बहुत तेज है और गहरी भी हैं कभी कभी तो यह आधी दर्जन धाराओं में विभक्त हो जाती है इसमें बड़ी से बड़ी नावें और स्टीमर भी चल सकते हैं। चान्दपुर के निकट धारा सात मील चौड़ी हो जाती है। चान्दपूर और हिनैचपुर बड़ी बड़ी बाजारें हैं।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य